No. 1 2020 Stifet 1988

Speil दर्पण

Pris 25 kr
अंक १ २०२० स्थापित १९८८

Et flerkulturelt magasin på hindi og norsk

हिन्दी और नार्वेजीय भाषा का बहुसांस्कृतिक द्वैमासिक

नार्वे के राजा हरल्ड पंचम। Kong Harald.

श्रद्धांजलि। Kondolerer.

आरि बेन। Ari Ben.
30.09.72 - 25.12.19

गंगा प्रसाद विमल। Ganga Prasad Vimal.
03.06.39 - 23.12.19

बधाई। Gratulerer.

शतरंज चैम्पियन माग्नुस कार्लसन।
Magnus Karlsen.

मृदुला सिन्हा, लेखिका।
Mridula Sinha, forfatter.

चित्रा मुद्गल, लेखिका।
Chitra mudgal, forfatter.

Kulturnytt सांस्कृतिक समाचार

श्री कैलाश सत्यार्थी के जन्मदिन की पूर्व संध्या और सुरक्षित बचपन दिवस के अवसर पर हेमिंगबर्ड पुरस्कार रेलमंत्री पीयूष गोयल ने दिया।
Hamingbird-prisen ble delt ut til fire personer av Peyush Goyal dagen før på Kailash Satyarthis fødselsdag.

दिल्ली पुस्तक मेला में ६ जनवरी को सुरेशचन्द्र शुक्ल की पुस्तक 'प्रवासी का अन्तर्द्वन्द्व' का लोकार्पण केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के सहयोग से हुआ।
Diktsamling på hindi 'Pravasi ka antardvandv' av Suresh Chandra Shukla ble lansert på Verdens bokmesse i Delhi.

प्रो. लहरी राम मीणा के काव्य संग्रह 'जिस उम्मीद से निकला' भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित का लोकार्पण पुस्तक मेला दिल्ली में हुआ।
Diktsamling 'Jis ummeed se nikla' av Dr. Lahri Ram Meena ble lansert på Bokmesse i Delhi.

फोटो : स्पाइल

Speil दर्पण

Speil er et flerkulturelt magasin på norsk og hindi. Vi presenterer viktige nyheter både fra India og Norge for våre lesere.

Formålet vårt er å øke forståelse og kontakt mellom mennesker og kulturer.

Speil er et talerør for kulturarbeidere i Norge, uansett etnisk bakgrunn. Vi ønsker alle velkommen til å skrive i Speil-दर्पण. Har du noe å bidra med, spørsmål, ideer eller lignende? Ta kontakt med oss på

speil.nett@gmail.com

Støtteabonnement for Speil er 100,- pr år.

Løssalgspris 25 kr

Bankgiro : 6072 05 14969

Ansvarlig redaktør (Editor) सम्पादक:
Suresh Chandra Shukla
Redaksjon (Editorial board)
सम्पादक मण्डल:
Harald Burvald,
Sangita S. Diedrichsen, Sigrid Marie Refsum, Britt Bekkedal, Maya Bharti, Sukhdev Singh
India
Dr. S. K. Sethi (New Delhi)
Jai Prakash Shukla (Lucknow)

E-mail: **speil.nett@gmail.com** & **speilnett@hotmail.com**
Phone: (47) 22 25 51 57
Address: Post box 31, Veitvet 0518, Oslo, NORWAY

I dette nr. इस अंक में

हिन्दी Hindi

- **स्तम्भ**

सम्पादकीय ५
सम्पादक के नाम पत्र ७

- **लेख और समाचार**

लिखता क्यों है लेखक - अजय विद्युत ८
स्त्री विमर्श के संदर्भ में महीप सिंह की कहानियाँ - डॉ. विजय कुमार राऊत ११
डॉ. लक्ष्मी मल सिंघवी एक बहु आयामी व्यक्तित्व - रमानाथ अवस्थी १३
विज्ञान और तकनीकी में भारत की उपलब्धियाँ १७

- **पुस्तक समीक्षा**

संवेदना और सुरेशचंद्र शुक्ल की कविताएं - प्रो. निर्मला एस. मौर्य १५

- **हास्य व्यंग्य**

अर्थों का दिवंगत होना - डा. गिरिराजशरण अग्रवाल २०

- **फिल्मी**

अमिताभ बच्चन को दादा साहब फाल्के पुरस्कार १२
राज कपूर की वो रूसी हीरोईन.. - प्रभात पाण्डेय २७
तापसी पन्नू और भूमि पेडनेकर ने 'शूटर दादी' से कैसे सीखी चाल ढाल? - ज्योतिका सिंह २८

- **कवितायें**

कागज़ - नील अमित ७
डॉ. मंजू शुक्ला की दो कवितायें १०
सुंदर पुरुष, बहादुर स्त्रियाँ - ज्ञानेंद्रनाथ त्रिपाठी १६
राष्ट्रीय बोधगीत - डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी २२
लम्हें जिन्दगी के - अमर जीत 'अंजान' २२
सोने में सुगंध नहीं होती - चिरंजीव कुमार देशबन्धु २२
डॉ. त्रिभुवन नाथ शुक्ल की दो कवितायें २२
जाड़े पर - रमई काका २२
नितांत एकाकी - नूतन पाण्डेय २३
प्रवासी का अहसास - शरद आलोक २३
कविता को जीना पड़ता है - डा. राम गोपाल भारतीय २३
बुद्ध - डॉ. विवेक गौतम २३
कसम खायी है मुस्कराने की - नीरजा शुक्ला 'नीरू' २४
नए बरस की सोन घड़ी - शशि पाधा २४
गज़ल - राय भट्‌टी २४
हाइकु - एस. डी. तिवारी २४
एक मुद्‌दत हुई है उस चमन से हुए - अभिनव शुक्ल २५
प्रो. निर्मला एस मौर्य की दो कवितायें २५
प्रेम है तुम से - लालित्य ललित २६
नया वर्ष आया है - डा. दिग्विजय कुमार शर्मा 'द्रोण' २६
चिड़ियों को नींद नहीं आती - राम अवतार बैरवा २६

Norsk (Norwegian) नार्वेजीय

- **Faste spalter**

Leder 5
Lederbrev 7

- **Artikler og informasjon**

– Vi er sterkt preget av Ari Behns død 29
Nyttårs fortsettelse av Lars West Johnsen 30
Vant VM i hurtigsjakk 32
Nina Bansal blir en av få kvinnelige landslagstrenere i Norge. Det er bare ett problem. 33
Flere kvinnelige kunstnere å digge før det ble flaut 35
Fortsatt nest best på likestilling 36
730 millioner kroner til Norges idrettsforbund og olympiske og paralympiske komité 37
Regjeringen gir støtte til nye digitale læremidler i skolen 38

Speil दर्पण

सम्पादक Redaktør
सुरेशचन्द्र शुक्ल
Suresh Chandra Shukla

सम्पादक मण्डल: Redaksjon
Harald Burvald
Sangita Shukla Diedrichsen
Sigrid Marie Refsum
Britt Bekkedal
Maya Bharti

सलाहकार: Adviser / Rådgiver
Trygve Tveter, Advokat

Redaksjon i India
भारत में
Prof. (Dr.) Santosh Kumar Tewari
Hari Singh Pal (New Delhi)
Kripa Shankar (New Delhi)
Jai Prakash Shukla (Lucknow)
Shivram Pandey (Lucknow)
Dr. Vinay Kumar Sharma (Lucknow)

Distributor in India भारत में
Sanjay Mishra (Sanju Mishra)

Våre kilder हमारे श्रोत

India भारत
Rameshvar Mishra, Shanti Niketan
Ubbaidur Rahman Hashmi, New Delhi
Harmahinder Singh Bedi, Amritsar
Nirmala S Mourya, Chennai
Anand Sharma, Lucknow

Sverige स्वीडेन :
Ashutosh Tiwari
Anupama Pathak

Danmark डेनमार्क :
Deshbandhu Charanjiv Kumar

Tyskland जर्मनी :
Dr Indu Prakash Pandey
Dr Ram Prasad Bhatt

Storbritannia ब्रिटेन :
Vijay Rana

Canada कनाडा:
Neerja Shukla
Manish Kumar Mishra

Sør Afrika दक्षिणी अफ्रीका :
Rambhajan Sitaram

USA यूएसए :
Sher Bahadur Singh
Dr. Raj Gupta
Swarna Mishra

Leder

Likestilling er viktig

Innvandrerorganisasjoner i Oslo gjør mye viktig arbeid. Det er en variert gruppe med forskjellige målsetninger og aktiviteter.

Mange sliter med å rekrutere nye medlemmer og særlig med å få medlemmene til å delta aktivit og ta ansvar i organisasjonen. Ofte er de voksene menn som dominerer og som sitter i styret mens kvinne og unge ikke får eller tar ansvar.

Innvandrerorganisasjoner og tros -og livsynssamfunn må ha 40 prosent kvinne andel i styrene. Ungdommer må også inkluderes i styre. Det er veldig viktig for likestillingen.

Speil fyller 31 neste år.

Jeg har vært på Julemøte til Oversetterforeningen. Det var stor bekymringer ble vist av flere tilstedvarende medlemmer angående forandringen og mindre arbeidsstipend for kunstnere i fremtiden på grunn av mindre budsjettet for dette formålet.

Speil har erfaring i 31 år med flerkulturelt arbeid i Norge. Vi får stor respons og tilbakemeldinger som gir oss oppmuntring og den er videre med i utviklingen i tiden som kommer. Speil blir 32 år neste år.

Vi ber om både moralsk og økonomisk støtte av kulturelle organisasjoner, politikere og forfattete som vil hjelpe oss å videreføre kulturelle samarbeid og dialog mellom kulturer i Norge i mange år fremover. Vi håper på en felles markering for alle som ønsker å delta og eller biddra med en eller annen måte. Speil takker alle bidragsgivere, støttespillere og lesere for deres støtte.

Suresh Chandra Shukla, Redaktør

सम्पादकीय

महिला और पुरुष के मध्य समानता जरूरी

प्रवासी संस्थायें बहुत जरूरी कार्य कर रही हैं। यह विभिन्न लक्ष्यों और गतिविधियों के साथ एक विविध समूह हैं।

बहुत से लोग नए सदस्यों को बनाने के लिए संघर्ष करते हैं, खासकर सदस्यों को सक्रिय रूप से भाग लेने और संगठन में जिम्मेदारी लेने के लिए। अकसर वे अधिक आयु के पुरुष होते हैं जो हावी हैं और कार्यकारिणी में रहते हैं। जबकि महिलायें और युवा लोगों को जिम्मेदारी नहीं मिलती है या जिम्मेदारी नहीं लेते हैं। प्रवासी और धार्मिक संस्थाओं को चाहिए कि वह अपनी संस्थाओं की कार्यकारिणी में महिलाओं को कम से कम ४० प्रतिशत प्रतिनिधित्व दें। युवाओं को भी कार्यकारिणी में सम्मिलित करना चाहिये। यह महिला और पुरुष के मध्य समानता के लिए बहुत जरूरी है।

स्पाइल-दर्पण, अगले वर्ष ३१ वर्ष की

मैं लेखकों और अनुवादकों की क्रिसमस मीटिंग और भोज पर गया था। बहुत से सदस्यों ने कलाकारों- लेखकों को दिए जाने वाले सांस्कृतिक बजट में वजीफे और सहायता में कमी करने की सूचना पर चिंता व्यक्त की थी। स्पाइल-दर्पण को ३१ वर्षों का बहुसांस्कृतिक कार्यों का अनुभव है। हमको बड़ी मात्रा में प्रतिक्रियायें मिलती हैं और हमें फीडबैक मिलता है जिससे हमें समय के साथ-साथ विकास में प्रोत्साहन मिलता है।

हम सांस्कृतिक संगठनों, नेताओं और लेखकों से नैतिक और वित्तीय सहायता दोनों के लिए कहेंगे। हम आने वाले अनेक वर्षों तक भी नार्वे में संस्कृतियों के बीच सांस्कृतिक सहयोग और संवाद जारी रख सकेंगे और प्रबंधन करेंगे। हम स्पाइल-दर्पण की ३१वीं वर्षगांठ पर समारोह के आयोजन के लिए आशा करते हैं, जहाँ सभी को समारोह में सहयोग और भाग लेने का अवसर मिले। हम स्पाइल-दर्पण की ओर से सभी सहयोगियों, समर्थकों और पाठकों को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद देते हैं।

- सुरेशचन्द्र शुक्ल, सम्पादक

प्रोफेसर अवनीश कुमार
निदेशक

Professor Avanish Kumar
Director

भारत सरकार
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
उच्चतर शिक्षा विभाग
Government of India
Central Hindi Directorate
Ministry of Human Resource Development
Department of Higher Education

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि श्री सुरेश चंद शुक्ल जी द्वारा हिंदी और नार्वेजीय भाषा की बहुसांस्कृतिक द्वैमासिक पत्रिका "स्पाइल दर्पण" का नियमित रूप से प्रकाशन किया जा रहा है । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी को आदर्श मानकार स्थापित एवं प्रकाशित अपनी इस यात्रा में इस पत्रिका ने नार्वे में हिंदी के प्रचार - प्रसार एवं संवर्धन की दृष्टि से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। है। इस पत्रिका के प्रकाशन से नार्वे में हिंदी के विकास को न केवल एक नई दिशा मिलेगी बल्कि नार्वे और भारत के बीच भाषायी संबंध और सुदृढ़ होंगे ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी अशीम शुभकामनाएँ ।

07/01/2020

(प्रोफेसर अवनीश कुमार)

निदेशक

पश्चिमी खण्ड-7, रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली-110066
West Block 7, R.K. Puram, New Delhi-110066 ☎ : 011-26100758, 26102882
E-mail : dirchd-mhrd@gov.in, dravanishkumar@gmail.com
www.chdpublication.mhrd.gov.in

Leserbrev
सम्पादक के नाम पत्र

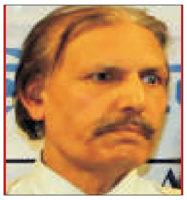

स्पाइल-दर्पण मैगजीन को बीस साल से नियमित पढता हूँ। २७ फरवरी २०२० को मुझे नार्वे आये ४६ साल हो जायेंगे।

इन सालों में मैंने देखा है कि कोई भी मैगजीन हिंदी, उर्दू और पंजाबी में यहाँ नार्वे से निकली पर बाद में बंद हो गयी। मुझे लगता है बड़ा मुश्किल काम है मैगजीन को छापना। स्पाइल मैगजीन ३१ सालों से लगातार निकल रही है यह बहुत खुशी की बात है। क्योंकि एक मैगजीन समाज की सूरत पेश करती है। लोगों की आवाज होती है। कलाकारों की भी आवाज होती है। मैं खुद गायक हूँ इसलिए मुझे पता है कि कलाकार के लिए स्टेज जरूरी है या ऐसी जगह जहाँ वह गाकर अपनी बात कह सके। मैगजीन बताती है जब उस कलाकार ने गाया था तो उसका परफॉर्मेंस (प्रस्तुतीकरण) कैसा था। मैगजीन एक तरह से हमारे सामाज का दस्तावेज होती है।

स्पाइल-दर्पण पत्रिका को और उसकी पूरी टीम को मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। इसी के साथ मैं नए साल की मुबारकबाद भी देता हूँ।

राज कुमार भट्टी, ओस्लो, नार्वे।

आदरणीय सम्पादक जी,

मैं स्पाइल की नियमित पाठक हूँ और स्पाइल के पिछले दोनों अंक बेहद ही रोचक हैं। जिसमें नोबल पुरस्कार व महात्मा गाँधी के १५०वीं वर्षगांठ के विशेष अंक हैं। इस बार शांति का नोबल पुरस्कार एथोपिया के अबी अहमद अली को मिला जिन्होंने अपने पड़ोसी देशों सोमालिया और इरीटीया तथा आसपास के देशों के विवाद दूर करने और आपसी समझौता कराने में अपनी महत्वपूर्ण भमिका निभाई और आगे भी प्रयासरत हैं। मेरी उनके लिये शुभकामनायें हैं। दूसरे अंक में महात्मा गांधी और उनके सत्य और अहिंसा के योगदान के सम्बन्ध में बहुत ही सामयिक लेख हैं जो शोधकर्ताओं के लिए बहुत लाभकारी हैं। मेरी स्पाइल की पूरी टीम को शुभकामनायें जिन्होंने प्रकाशन के ३१ वर्ष सफलतापूर्वक पूरे किये हैं।

श्रीमती रंजना सेठी
नई दिल्ली, भारत

आदरणीय सुरेशचंद्र शुक्ल जी,

स्पाइल दर्पण पत्रिका देखने और पढ़ने का सौभाग्य मिला। यह अद्भुत संयोग है कि हिंदी-नौर्वेजियन द्विभाषी पत्रिका विश्व में हिंदी की समृद्धि में विगत ३१ वर्षों से समर्पित है। विषय वैविध्य से पत्रिका की रोचकता कमाल की है। यह पत्रिका जहाँ हिंदी का विकास कर रही है वहीं भारतीयता संस्कृति का संवर्धन एवं संरक्षण के दायित्व का निर्वहन कर रही है। समर्पित भाव से हिंदी की सेवा कर रहे वरिष्ठ प्रवासी साहित्यकार श्री सुरेशचंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' को हार्दिक बधाई और कामना करता हूँ कि पत्रिका अनवरत प्रकाशित होती रहेगी।

शुभकामनाओं सहित
डॉ. दीपक पांडेय
सहायक निदेशक
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
पश्चिमी खंड -७,आर के पुरम
नई दिल्ली ११००६६

यह मेरा परम सौभाग्य है कि विश्व पुस्तक मेला २०२० को नई दिल्ली में आयोजित हुआ। इस दौरान केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के स्टाल पर श्री सुरेशचन्द्र शुक्ल जी से मुलाकात हुई और उनकी संपादित पत्रिका जो नार्वे से प्रकाशित होती है, स्पाइल-दर्पण को पढ़ने का मौका मिला। यह एक भारतीय लेखक, चिंतक एवं कवि का सफल प्रयास है कि विदेश में रहकर अपनी भारतीयता व उसके गौरव को पत्रिका के माध्यम से रेखांकित कर रहे हैं।

इस पत्रिका में प्रकाशित उनकी कविता 'कुछ करके जायेंगे' में प्रेम ही जीवन से जुड़ने की कड़ी है। ये जीवन दर्शन की सबसे बड़ी सुन्दरता को व्यक्त करती है। इसके अतिरिक्त पत्रिका में साहित्य के विभिन्न आयामों पर भी प्रकाश डाला है। मैं स्पाइल-दर्पण तथा श्री सुरेशचन्द्र शुक्ल को शुभकामना देती हूँ कि वे इसी तरह पत्रिका का सफल संपादन व प्रकाशन कर लेखक व कवियों के विचारों से परिचित कराते रहें।

डा. अनिता डोगरे
सहायक निदेशक,
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय,
नई दिल्ली

काग़ज़

नील अमित

जल रहा है दिल काग़ज़ की तरह
पर राख अभी भी बाकी है
भूला नहीं हूँ मैं
अभी भी सपनें देखना
वक्त बीत रहा है
पर उड़ान अभी भी बाकी है
डरा नहीं हूँ मैं कभी भी कठिनाईयों से
अपने दो मुसीबतों को
संघर्ष अभी भी बाकी है
निकला हूँ अलग जिन्दगी की तलाश में
सफ़र तो बहुत मुश्किल है
पर जान अभी भी बाकी है।

लिखता क्यों है लेखक

अजय विद्युत

अजय विद्युत

सवाल आपके मन में भी कभी न कभी उठा होगा कि आखिर ये लेखक लिखते क्यों हैं? वर्ष १९४६ में इंग्लैंड की एक मैगजीन 'गैंगरेल' में प्रख्यात उपन्यासकार जार्ज आरवेल (जन्म २५ जून १९०३ -मृत्यु २१ जनवरी १९५०; प्रमुख कृतियां 'एनिमल फार्म' और '१९८४') का एक लेख छपा था- 'मैं क्यों लिखता हूँ'। लेख में जार्ज आरवेल कहता है कि लेखन के पीछे हर लेखक के चार बड़े उद्देश्य होते हैं। ये चारों बातें हर लेखक में किसी न किसी अनुपात में अवश्य पाई जाती हैं- १. शुद्ध अहंकार- इसमें लेखक की यह इच्छा होती है कि उसके बारे में दूसरे लोग बात करें और वह ज्यादा चतुर समझा जाए। मृत्यु के बाद भी उसको याद किया जाए, आदि। २. सौंदर्यवर्धक उत्साह- इसमें लेखक चाहता है कि उसने दुनिया की जो सुंदरता देखी है, वह दूसरों को बताए, ताकि दूसरे भी उसका अनुभव कर सकें। ३. ऐतिहासिक कारण- इसमें लेखक चाहता है कि सच्चे तथ्य लोगों के सामने रखे जाएं, ताकि आने वाली पीढ़ियां उनका इस्तेमाल कर सकें। ४. राजनैतिक उद्देश्य- इसमें लेखक की इच्छा होती है कि वह दुनिया के लोगों के विचार को बदल दे और उन्हें अपने बताए रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करे। आरवेल ने कहा कि उसके लेखन के कारणों में प्रथम तीन उद्देश्य ज्यादा रहे हैं और चौथा उद्देश्य कम। आरवेल द्वारा बताए चार उद्देश्यों के अलावा लेखन के और कारण भी होते हैं। कुछ लोग सिर्फ पैसा कमाने के लिए लिखते हैं। शिक्षण जगत से जुड़े लोग अक्सर अपने कैरियर में आगे बढ़ने के लिए भी लिखते हैं। अमृतलाल नागर जी के लिए कहानी, उपन्यास लिखना उनकी रोजी-रोटी थी। उसकी कमाई से उनका घर चलता था। उर्दू लेखक सआदत हसन मंटो ने एक जगह कहा है कि मैं जीने के लिए लिखता हूँ और पीने के लिए लिखता हूँ। परंतु इन लोगों ने लेखन के लिए किसी तरह का समझौता नहीं किया। अर्नेस्ट हेमिंग्वे ने एक इंटरव्यू में कहा था कि यदि लेखन आपकी सबसे बड़ी लत हो जाए और सबसे बड़ा सुख हो जाए, तो सिर्फ मृत्यु ही आपको लिखने से रोक सकती है। लेखक भी अलग अलग कोटि के होते हैं। चेतन भगत और अमीश त्रिपाठी जैसे लेखक पहले बैंकिंग क्षेत्र में रहे। लेकिन फिर उनके भीतर का लेखक उभरकर आया और उन्होंने अपना प्रोफेशन बदल लिया। जबकि नरेंद्र कोहली चौथे दरजे की पढ़ाई के दौरान ही कलम चलाने लगे थे और जैसे छोटे बच्चे खेलने में रम जाते हैं वह लिखने में रम जाते थे। 'राष्ट्रीय सहारा' के लिए हमने अलग अलग पीढ़ी के दो अत्यंत प्रसिद्ध लेखकों नरेंद्र कोहली (जन्म- ६ जनवरी १९४०; प्रमुख उपन्यास श्रृंखला- दीक्षा, महासमर, तोड़ो कारा तोड़ो) और अमीश त्रिपाठी (जन्म- १८ अक्टूबर १९७४; प्रमुख कृतियां- द इममोर्टल ऑफ मेलुहा, द सीक्रेट ऑफ दी नागास, द ओथ ऑफ दी वायुपुत्रा, स्कोन ऑफ इक्ष्वाकु, सीताः वारियर ऑफ मिथिला और रावणः एनिमी ऑफ आर्यावर्त) से उनके लिखने की वजह पूछी।

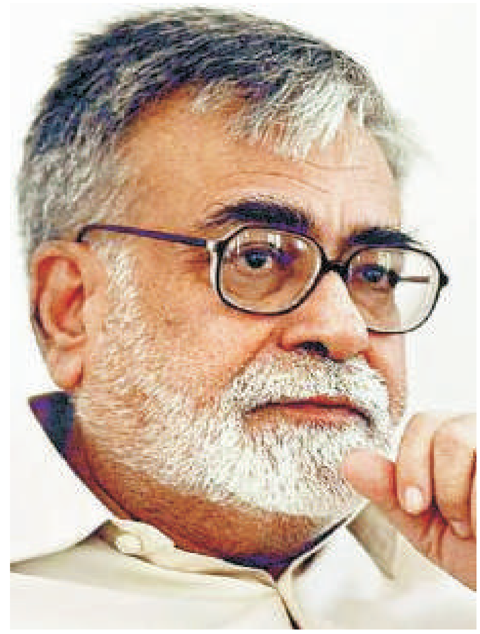

नरेंद्र कोहली

मुझे तो जब से याद है मैं लिख ही रहा हूँ नरेंद्र कोहली

जयपुर में किशोरों के लिए एक प्रतियोगिता हुई थी जिसका विषय था कि आप बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं। प्रतियोगिता के निर्णायक ने बहुत दुख से कहा कि 'मैंने कम से कम सौ निबंध पढ़े। किसी को डाक्टर बनना है, किसी को इंजीनियर... वगैरह-वगैरह कई प्रोफेशन की बातें की गई हैं। इन सौ में से एक भी ऐसा नहीं है जिसने कहा हो कि मुझे लेखक बनना है।' वह चिंतित थे कि साहित्य का क्या होगा। अंत में मुझे बोलना था और मैंने कहा कि आपको इतना चिंतित और दुखी होने की जरूरत नहीं है क्योंकि लेखक बनता नहीं, पैदा होता है।

जब मैं सोचता हूँ कि मैंने किसके प्रभाव में, किसकी प्रेरणा से लिखना शुरू किया, या किस घटना ने मुझे लेखन की ओर मोड़ा... तो मुझे कुछ याद नहीं आता। शुरू से एक ही बात जानता था कि मुझे लिखना है। क्यों लिखना है इसका कोई

तर्क नहीं था। जैसे एक बच्चा गली में क्रिकेट, गुल्ली डंडा, कंचे कुछ भी खेल रहा है। उससे कहो क्यों खेल रहे हो? वह बच्चा है उसे खेलना है, यह उसका स्वभाव है। वैसे ही मेरा स्वभाव है लिखना। जब हम बड़े होते हैं और अपने से प्रश्न पूछते हैं तब मेरी समझ में आया कि लिखना मेरे स्वभाव में है।

मुझे तो जब से याद है मैं लिख ही रहा हूँ। अच्छी तरह याद है कि चौथी कक्षा में था तो चार मित्रों ने मिलकर दस पेज की एक हस्तलिखित पत्रिका निकाली। उसमें भी मैंने लिखा। मन में यह नहीं था कि मुझे लेखक बनना है। मेरे मन में यह था कि मैं तो लेखक हूँ। मैं तो पैदा ही इसी काम के लिए हुआ हूँ। तो जैसा जिस समय जिस अवस्था के अनुसार लिखना था वह लिखता रहा। पहले स्कूल की हस्तलिखित पत्रिकाओं में लिखा। आठवीं में आया तो पत्रिका बाकायदा मुद्रित हुई और उसमें मेरी कहानी छपी। फिर जमशेदपुर और आसपास के शहरों जैसे धनबाद, झरिया आदि में छोटी मोटी पत्रिकाओं में मेरी रचनाएं छपती थीं।१९५७ में मैंने मैट्रिक किया उससे पहले की बात है। पटना में एक संस्था पूरे बिहार के स्कूली बच्चों की वाद-विवाद प्रतियोगिताएं कराती थी। उनकी पत्रिका थी 'किशोर'। उसमें भी छपा। फिर सन् साठ या उससे शायद कुछ पहले 'सरिता' के 'नए अंकुर' कॉलम में एक कहानी 'पानी का जग, गिलास और केतली' छपी।

इन सब में छपते हुए फरवरी १९६० में इलाहाबाद से श्रीपत राय की पत्रिका 'कहानी' में मेरी एक कहानी छपी 'दोहा'। उसके बाद फिर लेखन का क्रम नियमित हो गया। दूसरे तीसरे महीने तो 'कहानी' में ही छपता रहा। जब दिल्ली आया और एम.ए. में था तो सारिका में मेरी कहानी 'मेरी होने वाली पत्नी' छपी। धर्मयुग में छपना शुरू हुआ। इतना छपा कि किसी ने मुझसे पूछा, 'धर्मवीर भारती (धर्मयुग के संपादक) से आपकी कोई रिश्तेदारी है कि जो आपको इतना छापते हैं?' तो मैं नियमित निरंतर लिखता भी रहा और छपता भी रहा। और ऐसा नहीं कि केवल लिखने का ही जुनून था बल्कि अपना नाम छपा हुआ देखने की इच्छा भी शुरू से ही थी।

बैंकिंग से कथा साहित्य, विचित्र सफर रहा -अमीश त्रिपाठी

अमीश त्रिपाठी

आज मेरी एक पहचान लेखक की है। कुछ साल पहले मेरी व्यावसायिक पहचान भिन्न थी। मैं एक बैंकर था; एक पारंपरिक एमबीए, सूटेड-बूटेड, जुमलों में बात करने वाला वित्तीय टाइप का बंदा। यह एक लंबा और विचित्र सा सफर रहा है; वित्त से कथा-साहित्य लेखन का। आप में से कुछ लोग कह सकते हैं... लंबा?

दिमाग में एक विचार आया! मैंने उसके बारे में लिखने की जरूरत महसूस की। लेकिन मैं अनिश्चित था। मेरे परिवार ने जोरदारी से मेरा हौसला बढ़ाया। उन्होंने मुझसे कहा, 'यार, यह अच्छा सुनाई दे रहा है, इसे लिख डालो।' और मैं उनकी बात सुनने के लिए मजबूर हो गया। इसलिए नहीं कि मैं हमेशा वही करता हूँ जो मेरा परिवार करने को कहता है। असली वजह यह थी कि जब मैं अपनी किताब पर काम नहीं कर रहा होता था तो मैं बेहद नाखुश रहता था। उस दौरान मैं बहुत जबर्दस्त दबाव वाली नौकरी में था। मैं बैंकिंग सेक्टर में काम करता था! हम वित्तीय दुनिया को तबाह करने में मसरूफ थे! इसमें बहुत समय और मेहनत लगती है... सही? मेरे पास किताब लिखने के लिए वक्त ही नहीं होता था। व्यावहारिक आदमी होने के कारण मैंने तर्कसम्मत काम किया! अपनी जिंदगी से 'वक्त बर्बाद करने वाली हर गतिविधि' को निकाल बाहर किया और खुद को बस तीन चीजों तक सीमित कर लियाः १. नौकरी करना, २. परिवार के साथ वक्त बिताना और ३. किताब लिखना। मैंने टीवी देखना, पार्टियों में जाना, यहाँ तक कि व्यायाम करना तक बंद कर दिया। मगर फिर भी मुझे इतना वक्त नहीं मिल पा रहा था कि लिख सकूँ। वास्तव में मैं केवल इतवारों को लिख रहा था।

फिर मेरी पत्नी को कुछ सूझा। उन्होंने कहा कि मैं रोजाना आफिस आने-जाने में दो-तीन घंटे बर्बाद कर रहा हूँ। मैं मुंबई में था और रोजाना ड्राइव करके काम पर आता-जाता था। उन्होंने राय दी कि हम एक ड्राइवर रख लें। उन दिनों ड्राइवर आसानी से उपलब्ध थे, और प्रतिमाह पाँच हजार रुपए का वह बेहतरीन निवेश था जो मैंने अपनी जिंदगी में कभी किया। जल्दी ही मैं अपनी कार की पिछली सीट पर अपनी किताब लिख रहा था। इसमें मुझे चार-पांच साल लगे, लेकिन आखिरकार किताब सामने आ गई।

गैर-लेखकों को ऐसा लग सकता है कि एक बार किताब लिख ली गई तो बस काम खत्म। दरअसल नहीं, दूर-दूर तक नहीं। आपको इसे प्रकाशित करवाना होता है, जो अपने आप में एक नई कहानी है। हर उस प्रकाशक का, जिसने मेरी किताब पढ़ी थी, ख्याल था कि यह किसी भी सूरत में चलने वाली नहीं है। सबने इनकार कर दिया। कितनों ने? सच कहूँ तो बीस के बाद मैंने गिनना ही बंद कर दिया था।

मगर, मेरी पत्नी- मुझे लगता है कि मेरे जैसे रचनात्मक रूप से दिवालिया इंसान ने वाकई कोई किताब लिखी है, इस बात से इतनी हतप्रभ थी कि हर मुमकिन तरीके से मेरा साथ देने के लिए कटिबद्ध थीं। उन्होंने राय दी कि अगर जरूरत पड़ी तो हम अपने कुछ खर्चे कम कर देंगे, मगर खुद किताब को प्रकाशित करवाएंगे। भले इसका मतलब यह हो कि हम केवल किताब को प्रकाशित करवा पाएंगे और उसे अपने परिवार और मित्रों में मुफ्त बांटेंगे। मैंने कहाः ठीक है, अच्छा है,

नोबेल विजेता - वी.एस. नॉयपाल
(१७ अगस्त १६३२ - ११ अगस्त २०१८)

उपन्यासकार, लेखक - मुंशी प्रेमचन्द
(३१ जुलाई १८८० - ८ अक्टूबर १६३६)

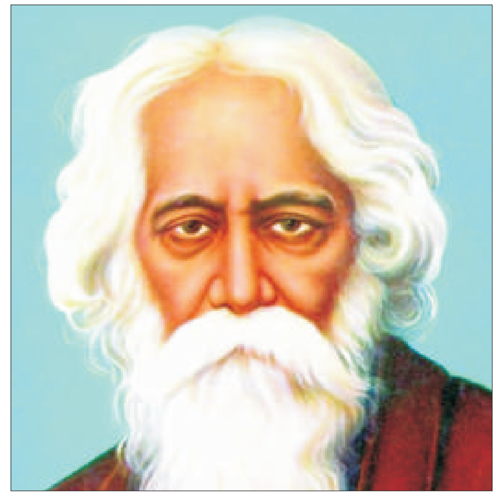

नोबेल विजेता - रविन्द्र नाथ टैगोर
(७ मई, १८६१ - ७ अगस्त १६४१)

शुक्रिया, स्वीटहार्ट। मगर मेरे पिटारे में आश्चर्य अभी बाकी थे। बहुत समय से परेशान हो रहे मेरे एजेंट, जिन्होंने मेरी किताब हरेक प्रकाशक को भेजी थी और जिनके मुँह पर हर दरवाजा बंद कर दिया गया था, वे भी इस किताब में मेरे यकीन से प्रभावित थे। उन्होंने पेशकश रखी कि अगर मैं मार्केटिंग में निवेश करूँ तो वे प्रिंटिंग में निवेश कर सकते हैं। मैंने कहाः ठीक है, शुक्रिया, दोस्त।

इस ईश्वरकृत साझेदारी से मेरी किताब, 'द इमॉर्टल्स आफ मेलूहा' मार्च २०१० में लॉन्च की गई। मुझे कतई कोई अपेक्षा नहीं थी, लेकिन लॉन्च के पहले हफ्ते में ही किताब वास्तव में बेस्टसेलर्स के चार्ट में पहुंच गई थी।

मेरी माँ, जो कि बेहद जहीन महिला हैं, ने एक बार मुझसे कहा था कि अगर तुम्हें कभी पता लगे कि तुम्हारा काम खुद तुम्हें आनंद दे रहा है- नाकामी तुम्हारे दिल को उदास नहीं करती है, और कामयाबी तुम्हारे मन में अहं भाव नहीं भरती- तब तुम जान लोगे कि तुम अपनी आत्मा के उद्देश्य के साथ, अपने स्वधर्म के साथ तालमेल में काम कर रहे हो। मैं उसी शानदार स्थिति में हूँ।

डा. मंजू शुक्ला की दो कवितायें

मर्यादाएं

कदम-कदम पर बाधाएं
नारी चरित्र की परिभाषाएं
पाठ है ये नैतिकता का
या आधी आबादी के दमन चक्र का
केवल देह नहीं पहचान मेरी
फिर कैसा मेरा चीर हरण
उपहास नहीं मेरे वजूद का
अपमान है ये माँ के पियूष का
धिक्कार है ये पौरूष का
कलंक है मानवता का
तुम क्या मोल लगाओगे मेरा
मोल लगा कब ममता का
रगों में बहते सुर्ख लहू का
स्पन्दन हूँ मैं जीवन का
वरदान हूँ मैं उस विराट का
धात्री हूँ मैं समस्त सृष्टि की
दुआ हूँ मैं तुम्हारे अभीष्ट की
अमृत छलकाती सरिता सी
सबके कलुष हर लेती हूँ
निर्बाध गती से बहती हूँ
निर्मल हूँ मैं गंगा सी
हरियाली घर आंगन की
मूरत मैं पावनता की
कब तक होंगी मेरी ही अग्नि परीक्षाऐं
निभानी होंगी तुमको भी लक्ष्मण रेखायें
सीखनी ही होंगी सह अस्तित्व की मर्यादाऐं

आधी रोटी

रक्त हुई चाँदनी और चाँद आधी रोटी
पनघट तक जाते-जाते रीत गई जिन्दगी।
बंजर सी धरती पर फूले जो पलाश,
सतरंग चूनर ने रोपी फिर आस।
पथरीली पगडंडी पर झाँझरों की थाप,
कदमों ने नाप लिये धरती आकाश।
आँचल में बाँध लिये टूटे पँख प्यासे सीपी,
रक्त हुई चाँदनी और चाँद आधी रोटी।
स्वर्णिम मृग-तृष्णा ने छीने सब मीत,
सपनों के सौदागर ने लूट लिये गीत।
बिंधी हुई अंजुरी से झरती हुई बन्दगी,
वर्जना की सलीबों पे रोती हुई जिन्दगी।
वक़्त के तकाजों को ढोती हुई जिन्दगी,
अपने ही कांधों पर सोती हुई जिन्दगी।
रक्त हुई चाँदनी और चाँद आधी रोटी,
पनघट तक जाते-जाते रीत गई जिन्दगी।

स्त्री विमर्श के संदर्भ में महीप सिंह की कहानियाँ

डॉ. विजय कुमार राऊत
न्यू आर्ट्स, कॉमर्स एण्ड साइन्स कॉलेज, पारनेर, महाराष्ट्र

समकालीन कहानीकार महीप सिंह ने अपनी कहानियों में स्त्री जीवन का अत्यंत संवेदना से यथार्थ चित्रण किया है। समाज के स्त्री और पुरुष डॉ अंग है। इसमें दोनों मुख्य है लेकिन पुरुष ने बडी चालाकी से स्त्री को अबला बनाया। उसे जननी, जन्मदात्री, शक्ती का रूप माना। यह केवल कहने के लिए रहा। यथार्थ में उसकी पहचान अबला के रूप में बनायी गयी। पुरुष प्रदान सत्ता के लिए जितना जिम्मेदार पुरुष का स्वार्थ है, उतना ही स्त्री का अज्ञान है। उनकी कहानियों में महानगरीय मध्यवर्गीय स्त्री का वास्तव चित्रण दिखाई देता है। उनकी कहानियों में नारी के विभिन्न रूप दिखाई देते है-

आत्मनिर्भर स्त्री

महीप सिंह की कहानियों में महानगरीय मध्यवर्गीय वेतनभोगी स्त्री का सशक्त चित्रण हुआ अहि/उनकी कहानियों की लगभग हर नायिका आत्मनिर्भर दिखाई देती है। वह आत्मावलंबी, आर्थिकदृष्टी से स्वयं निर्भर दिखाई देती है। जिसके परिणाम स्वरूप पति की छत्रछाया न होने पर भी अपना जीवनयापन ठीक-ठाक चला रही है। आज स्त्री अपने अधिकारों के प्रति जागृत बनती जा रही है। 'काला बाप गोरा बाप' कहानी की जमीला को पति अन्वर दो बेटियों सहित अकेला छोड़कर दुसरी शादी करता है। कई वर्षो बाद वह जमीला को पत्र भेजकर मिलने की अनुमती चाहता है। पत्र पढकर जमीला सोचती है- 'सचमुच तुम्हारा खत पाकर मैं हैरान रह गई, दस साल के बाद तुम्हें मेरी और बच्चे की याद कैसे आ गई।' साथ ही साथ उसे यह भी बता देती है कि उसने अनवर से शादी की है और एक बेटी को जन्म दिया है। जमीला दुसरे पति अन्वर की खुदगरजी भी जान गई थी लेकिन वह बेटियों को पिता का प्यार देता था इसलिए उसे युनूस से अच्छा मानती है। जमीला ने अपनी दोनों बेटियों को पढाया-लिखाया और आर्थिक दृष्ट्या स्वयं निर्भर बनाया। वह कहीं भी लड़खड़ती नजर नहीं आती।

स्वयंभू विचारी स्त्री-भारत वर्ष में सत्ता का हकदार केवल पुरुष है। सत्ता और संपती ही नहीं बल्कि विचार स्वतंर्त्य भी उन्हें ही है। आजकल इसमें परिवर्तन दिखाई दे रहा है। स्त्री अपनी अस्मिता के संदर्भ में जागृत होती जा रही है। सामाजिक न्याय की बहस और संघर्ष में जो स्थान कल तक मजदूर वर्ग और दलित जाति की मुक्ति का था, आज वही स्थान नारी मुक्ति का है। जिसके हाथ में विचार सत्ता थी उसने अपने पक्ष का अधिक विचार किया और दूसरे पक्ष को चालाकी से नजरांदाज किया लेकिन स्त्री शिक्षित होकर अपनी अस्मिता को प्राप्त करने लगी इस परिवर्तन की प्रक्रिया में स्त्री-पुरुष के बीच थोडा बहुत संघर्ष स्वाभाविक था जिसका महीप सिंह की कहानियों में सूक्ष्म चित्रण दिखाई देता है। पहले स्त्री को पति परमेश्वर, नैतिकता, संस्कार, मूल्य आदि में अटकाया था। विवाह के बाद लड़की को पति का उपनाम और विवाह के पहले पिता का उपनाम लगाना पडता है। लेकिन आज की स्त्री यह बातें जरुरी नहीं मानती। वह अपनी स्वयं की नई पहचान कराना चाहती है। 'माँ' कहानी की सरिता विवाह के पहले भी अपने पिता का नाम अपने नाम के आगे नहीं जोड़ती थी और शादी के बाद भी पति का नाम जोड़ना आवश्यक नहीं मानती। वह कहती है, मुझे सरिता बनकर रहना पसंद है। यह सुनकर पति को आश्चर्य लगा और उसने कहा, मेरा नाम लगाने में तुम्हें संकोच लगता है। इस पर सरिता ने कहा, 'इससे मुझे इंकार नहीं है न ही मुझे किसी तरह का संकोच है। लेकिन सरिता रहकर भी मैं आपकी बीवी हूँ। क्या सरीन की मोहर लगाना इस रिश्ते के लिए जरुरी है।' सरिता का विचार सरल और साधारण है लेकिन उनका पति उन्हें समझ नहीं पाता। इससे हम मान सकते है कि महीप सिह की कहानियों की स्त्री स्वयंभू विचार वाली स्त्री है।

पुराने नैतिक मूल्यों का विरोध

भारतीय संस्कृति में नैतिकता और स्त्री का घनिष्ठ संबंध दिखाई देता है। नैतिकता आवश्यक है लेकिन उसके पालन की जिम्मेदारी स्त्री-पुरुष दोनों की होनी चाहिए। विधवा विवाह के बारे में ऐसा दिखाई देता है कि विधूर दूसरा विवाह कर सकता था लेकिन विधवा नहीं। आजकल इसमें काफी परिवर्तन होता जा रहा है इसका चित्रण 'पारदर्शक' कहानी में दिखाई देता है। 'तृप्ती' का विवाह कही नहीं हो रहा था जब हुआ पति गुजर गया और तृप्ती विधवा बन गयी। उसकी सहेली शैलजा का तलाक हुआ था उसके विचार अलग थे वह तृप्ती को ढाढस देती है कि अब इन बातों को महत्व नहीं देना चाहिए। वह कहती है 'आज के जमाने में कौन पूछता है इन सर्टिफिकेटस को कौन पूछता है। अब मुझे देखो मैं क्या हूँ, कुंवारी? विवाहित? या विधवा? पर मैं कहाँ परवाह करती हूँ। मै जानती हूं कि मैं बस मैं हूँ। जब जिंदगी में अपना रास्ता खुद ही बनाना हो, उसपर खुद ही चलना हो तो क्या सधवा और क्या विधवा?' तृप्ती समाज की दृष्टि से विधवा थी इसलिए चिंतित थी लेकिन शैलजा उस समाज के पूराने मुल्यों का विरोध कर उस समस्या की ओर अलग दृष्टि से देखना पसंद करती है। महीप सिंह की कहनियों के स्त्री पात्र पुराने नैतिक मूल्यों का विरोध कर रहें है जो केवल स्त्री के लिए समझे जाते है। नैतिकता स्त्री-पुरुष दोनों के लिए अत्यावश्यक है लेकिन किसी एक से ही अपेक्षा करना दूसरे पर अन्याय होने की अधिक संभावना रखता है इसलिए दोनों को इसके पालन की जिम्मेदारी उठानी चाहिए।

वैश्या जीवन

महीप सिंह ने अपनी कहानियों में आत्मनिर्भर स्त्री, स्वयंभू विचारी स्त्री के साथ-साथ वैश्या जीवन का भी सूक्ष्म चित्रण किया है। समाज में वैश्या की ओर हीनता से देखा जाता है। वास्तव में वह भी एक

मानव ही है उसे भी मन है, भावनाएं, आशाएं और अपेक्षाएं है इसे समाज नजरंदाज कर रहा दिखाई देता है। वैश्या को भी परिवार, संतान, पति और सम्मान की अपेक्षाएं होती है वह भी एक सामान्य स्त्री तरह जीवन जीना चाहती है उनकी इसी संवेदना का चित्रण महीप सिंह ने अपनी 'मैडम' और 'पेरिस रोड' कहनियों में किया है। मैडम कहती है, मैं भी सामान्य जीवन जीना चाहती हूँ लेकिन परिस्थितियाँ उसे नहीं जीने देती, 'न कोई अपनत्व, न कोई अधिकार, न सुख-दुख का आदान-प्रदान। एक पत्नी को जो सुख मिलता है वह मुझे तिलमात्र भी प्राप्त नहीं है।' पुरुष स्त्री को केवल एक उपभोग का साधन मानता है अपनी बेटी को छोडकर अन्य लडकी को वह बेटी नहीं मानता। 'पेरिस रोड' कहानी की सीताबाई को एक दलाल ने शादी करके कोल्हापूर से मुंबई लाया और जबरदस्ती व्यवसाय करा रहा था। सीताबाई अपनी सारी कहानी कुलबीर को सुनाती है। इससे पता चलता है कि वैश्या का जीवन दयनीय है। उन्हें जबरदस्ती व्यवसाय करना पडता है। उन्हें भी सामान्य स्त्री का जीवन जीने की अपेक्षा है लेकिन समाज उसे मान्यता नहीं देता इसका सूक्ष्म चित्रण बडी संवेदना के साथ महीप सिंह की कहानियों में दिखाई देता है।

सारांश रूप में महीप सिंह ने अपनी कहानियों में महानगरीय मध्यवर्गीय स्त्री के विभिन्न रूपों का सूक्ष्म चित्रण बड़ी संवेदना, स्पष्टता और यथार्थता से किया परिलक्षित होता है। स्त्री अपनी खोई हुई अस्मिता पुनः प्राप्त करना चाहती है जिसमें पुरुष वृत्ति की छटपटाहट नजर आती है। स्त्री का यह प्रयास न केवल स्त्री के लिए बल्कि समाज को विकास की ओर ले जाएगा इसमें दो राय नहीं होनी चाहिए। आवश्यकता है अपनी स्त्री विषयक गलत धारणाओं के परिवर्तन और अच्छी मानसिकता की।

संदर्भ ग्रंथ-

१) डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे- आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास

२) मंजू शर्मा- नारी के प्रति अत्याचार एवं मानवाधिकार

३) डॉ. साधना सिंह -नई कहानी में आधुनिकता बोध

४) डॉ. घनश्याम भूतड़ा -समकालीन हिंदी कहानियों में नारी के विविध रूप

५) महीप सिंह- सुबह की महक

६) महीप सिंह- संबंधों का सन्नाटा

७) सं. सुरेंद्र बारलिंगे- परामर्श अंक-३ जून १६६८

अमिताभ बच्चन को दादा साहब फाल्के पुरस्कार

अमिताभ बच्चन राष्ट्रपति राम नाथ कोबिंद से दादा साहेब फाल्के पुरस्कार लेते हुए।

अमिताभ बच्चन को राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद से राष्ट्रपति भवन में दादा साहब फाल्के पुरस्कार प्राप्त किया।

यह पुरस्कार भारतीय सिनेमा के पिता धुंडीराज गोविंद फाल्के के नाम पर है। यह १६६६ में स्थापित किया गया था। यह भारतीय सिनेमा में एक कलाकार के लिए सर्वोच्च सम्मान है।

इस पुरस्कार में स्वर्ण कमल (गोल्डन लोटस) पदक, शॉल और १०,०००.०० रुपये का नकद पुरस्कार शामिल है।

अमिताभ बच्चन, एक हल्के नोट पर ७७ वर्षीय अभिनेता ने सम्मानित होने पर अपने विचार साझा किए, "मेरे मन में एक संदेह पैदा हुआ जब मेरे नाम की घोषणा दादा साहब फाल्के पुरस्कार के लिए की गई थी। मैंने सोचा, क्या यह मेरे लिए एक संकेत है कि मुझे सेवानिवृत्त होना चाहिए और घर पर आराम करना चाहिए? लेकिन अभी भी कुछ काम हैं जिन्हें मुझे पूरा करने की आवश्यकता है और मुझे आशा है कि मुझे भविष्य में भी काम मिलेगा। मैं इस पर कुछ स्पष्टीकरण चाहता था।"

अमिताभ बच्चन ने उन्हें दादा साहेब फाल्के पुरस्कार प्राप्तकर्ता का नाम देने के लिए सरकार, सूचना और प्रसारण मंत्रालय और राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों के जूरी सदस्यों को धन्यवाद दिया।

डॉ. लक्ष्मी मल सिंघवी एक बहु आयामी व्यक्तित्व

रमानाथ अवस्थी

शरद-ऋतु के निरभ्र नील नभ पर तैरता हुआ कोई उजला-उजला मेघखण्ड, अथवा सागर के अथाह जल में तैरती नाव, यह सब कभी न कभी आपके देखने में भी आया होगा। यह देखकर एक क्षण के लिए ही मन में कोई रंग तिरा होगा। मेरा कई बार इस दृश्य से एकाकार होने का मौका मिला, मुझे याद है, जब तक मैं इस दृश्य के साथ रहा, तब तक संसार मेरे पास नहीं था, संसार ही क्यों? उस समय मेरे पास न भूख थी, न प्यास थी, न रात थी, न दिन था। उन क्षणों में मैं अपने भीतर उतरकर बड़ी सहजता के साथ सिर्फ अपने को ही पाकर किसी ऐसे सुख के साथ होता था, जो सुख मुझे न समाज से मिला, न घर-गृहस्थी से मिला, न कविता सुनाकर मिला। हाँ, वह आनन्द या उसी के जैसा आनन्द मुझे दो-तीन दुर्लभ चरित्र धारी व्यक्तियों के संपर्क में आकर जरूर मिला, ऐसे ही विरल व्यक्तियों में एक हैं डा. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी। ये मेरा अत्यन्त गोपनीय एवं भावात्मक रहस्य है, जिसे कभी किसी विशेष संयोग वश शब्द दे रहा हूँ। यह मेरा अत्यन्त गोपनीय एवं भावात्मक रहस्य है, जिसे किसी विशेष संयोगवश शब्द दे रहा हूँ। इसे लिखकर सोचता हूँ जैसे इस आंतरिक भावना को शब्दों में न व्यक्त करता तो अच्छा होता, मगर 'अब तो बात फैल गई, जाने सब कोई। वैसे जब किसी आत्मीय के बारे में कुछ कहना लाजमी हो जाये, तब उसे पूरी निष्ठा के साथ व्यक्त करना ही धर्म होता है। मुझे अच्छा लगता है, मैं इस धर्म के योग्य हो सका।

सिंघवी जी से कब मिला, उनसे मिले कितना समय बीता, पहली बार किस अवसर पर कहाँ मिला? यह सब कुछ बताना करीब-करीब वैसा ही है, जैसे कुछ सतही लोग बड़ी ऊँची आवाज के साथ कहते हैं, भारतवर्ष एक कृषि प्रधान देश है, हिमालय पर्वत इसका मुकुट है, गंगा हमारी माता है, आजादी बलिदान मांगती है आदि-आदि। प्रायः सभाओं में जो लोग इन तपस्यामय वाक्यों को निहायत बाजारू ढंग से बोलते हैं, लगता है जैसे कोई कातिल, अहिंसा पर भाषण दे रहा है। इसीलिए मैं सिंघवी जी के संदर्भ में मिलने का वर्ष, स्थान, अवसर और प्रयोजन बताकर अपने को इन बाजारू महापुरूषों की सीमा में नहीं लाना चाहता। उनका स्नेह सान्निध्य ही मेरी एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

मुझे स्मरण है, जब-जब मैं सिंघवी जी से मिला, तब-तब मुझे लगा जैसे मैं एक ऐसे संस्कार सम्पन्न, शीलवान, स्वाभिमानी, ज्ञानमंडित, विनम्र सुविख्यात व्यक्ति के साथ हूँ, जो सब कुछ के साथ होकर भी सब कुछ से उपराम है। जब भी मैं उनके साथ जितना भी रहा, मुझे लगा जैसे मैं पूरी तरह सांसारिक चिंताओं से मुक्त हूँ, जिससे मिलकर आपको बार-बार लगे कि वह असाधारण है मगर आपके लिए निहायत सहज है। सिंघवी जी को मैंने सदैव ऐसे ही असाधारण मगर मन से बहुत साधारण रूप में पाया है। उने सहज और बड़े होने के संदर्भ में एक प्रसंग की चर्चा करना चाहूँगा। वर्षों पूर्व जब मेरी पत्नी श्रीमती पुष्पा अवस्थी, नई दिल्ली स्थित मंदिर मार्ग में एक मद्रासी स्कूल में हिन्दी की वरिष्ठ प्रध्यापिका थीं, उसी समय उस संस्था के प्रिंसिपल दक्षिण भारत के एक उच्चकुलीन विद्वान श्री शिवरामकृष्णन थे। श्री कृष्णन का एक स्वप्न था कि कभी किसी रूप में वे डा. सिंघवी का स्वागत कर सकें, क्योंकि वे सिंघवी जी के बहुआयामी व्यक्तित्व के बहुत प्रभावित थे। किसी प्रसंग में पुष्पा जी ने उन्हें बताया कि हम लोग सिंघवी जी को जानते हैं, बस फिर तो दूसरे ही दिन एकाएक शाम को कृष्णन जी हमारे घर आ गए, आते ही बोले आप मुझे क्षमा करें मैं किसी विशेष स्थितिवश बिना किसी पूर्व सूचना के आपसे मिलने आ गया, मैंने कहा आपमें एक आदर्श अतिथि के पूर्ण लक्षण हैं, बैठिये, आपको स्वागत है। मेरे पूछने पर श्री कृष्णन ने कहा मेरा एक स्वप्न है, जो आपकी मदद से पूरा हो सकता है, मैं आपसे वही आग्रह करने के लिए आया हूँ, बात जारी रखते हुये बोले, मैं किसी बहाने डा. एल. एम. सिंघवी का स्वागत करना चाहता हूँ, आप मेरी मदद करें। अगले महीने के प्रारम्भ में हमारी संस्था का स्थापना दिवस समारोह है, मैं चाहता हूँ, डा. सिंघवी उसमें विशिष्ट अतिथि के रूप में आना स्वीकार कर लें, मैं आपके साथ चलकर

उनसे प्रार्थना करना चाहता हूँ। यह सब सुनकर मैं बड़े धर्म संकट में पड़ गया, मगर कृष्णन जी का गहरा आदर भाव देखकर मैंने कहा, मैं आपके लिए कोशिश करूंगा, वैसे डा. सिंघवी बहुत व्यस्त हैं, उनका समय सही अर्थ में बहुत मूल्यवान है, लेकिन उनके प्रति आप में जो आदर है, मैं उसी से प्रभावित हूँ। दूसरे दिन मैंने सिंघवी जी को मिलने के लिए फोन पर अनुरोध किया, सदा की भांति उन्होंने मुझे मिलने के लिए मेरी ही सुविधानुसार समय दिया। प्रिंसिपल महोदय को फोन करके सूचित किया, मगर उन्हें आने से रोका। मैं सिंघवी जी से मिला, उन्होंने मुझे समारोह में शामिल होन के लिए स्वीकृति दी।

स्कूल के समारोह में शामिल होने की स्वीकृति पाकर मैं बहुत प्रसन्न था, आखिर वह दिन आया, श्री कृष्णन ने मुझसे कहा डा. सिंघवी को घर से स्कूल लाने के लिए, आपके पास में गाड़ी लेकर आऊँगा, हालांकि सिंघवी जी ने कहा था, आप निश्चिंत रहें, मैं यथासमय स्कूल पहुँच जाऊँगा। मगर मैंने कहा मेरा मन है मैं आपके साथ ही स्कूल जाऊँ, परिणामस्वरूप श्री कृष्णन के साथ मैं सिंघवी जी के निवास स्थान साउथ एक्सटेंशन गया, भीतर जाकर मैंने सिंघवी जी से कहा, आपको लेने प्रिंसिपल महोदय भी मेरे साथ हैं, श्री कृष्णन जी को भीतर लेने के लिए डा. सिंघवी खुद ही उनके पास गए, श्री कृष्णन, सिंघवी के चरणों पर नत थे। स्कूल पहुँचने पर सिंघवी जी का भव्य स्वागत हुआ, वहाँ दक्षिण भारत के अनेक गणमान्य अतिथि सिंघवी जी को सुनने के लिए एकत्र थे। सिंघवी जी ने अपने संक्षिप्त मगर बहुत सागर्भित भाषण में शिक्षा नीति के बारे में बहुत महत्वपूर्ण तथ्य दिये। मैं उनकी सहज भाषण-शैली से बहुत प्रभावित था। समस्त श्रोतागण बड़े चमत्कृत थे। मैंने देखा उस साधारण संस्था में डा. सिंघवी ने बेहद सरलतापूर्ण व्यवहार किया, प्रिंसिपल महोदय तो कृत-कृत्य थे। स्कूल में सिंघवी जी को देखकर मेरे भीतर एक ही विचार बार-बार उठा, बड़ा आदमी, कहीं भी, किसी स्थिति में क्यों न हो, वह हर क्षण बड़ा ही रहता है।

यदा-कदा दिल्ली के काव्य आयोजनों में सिंघवी जी, कमला जी (श्रीमती सिंघवी) के साथ जाते थे, बड़े मनोयोग से कविताएं सुनते और सराहते थे। एक असाधारण कानूनविद् होने अज्ञेय जी से लेकर रमानाथ तक उनके और कमला जी के स्नेह-सूत्र में बंधे थे। कमला जी स्वयं ही एक अप्रतिम कवयित्री हैं, उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता है, उनका एक आदर्श भारतीय नारी के गुणों से भरपूर होना। मैंने सदा ही उनसे मिलकर अनुभव किया है कि वे सिंघवी जी के वशिष्ठ व्यक्तित्व और ऐतिहासिक कृतित्व की जीती-जागती साधना हैं।

दिल्ली में कभी-कभी सिंघवी जी कोई शाम कविता के साथ बिताते थे। ऐसी गोष्ठियों को प्रायः मेरे मित्र डा० कन्हैयालाल नंदन बड़ी निष्ठापूर्वक संचालित करते थे। आज भी मैं प्रायः सोचता हूँ सिंघवी जी जैसे व्यस्त व्यक्ति किस प्रकार ऐसी गोष्ठियों और आयोजनों के लिए समय निकालते हैं। वे चाहे देश में हों या विदेश में उनका सदाबहार व्यक्तित्व एक ऐसे सच्चे भारतीय का है, जो ज्ञान और प्रतिष्ठा के सोपानों पर चढ़कर भी प्रति सरल और सहज है। उनसे जो भी मिलता है, उसे लगता है जैसे वह जो था, उससे बड़ा होकर आ रहा है। उनके बारे में बहुत कहा जा सकता है, मगर आज सिर्फ इतने से ही संतोष करता हूँ।

आखिर में मैं अपने अग्रज वरिष्ठ कवि स्वर्गीय हंसकुमार तिवारी की दो काव्य पंक्तियाँ सिंघवी जी को भेंट करता हूँ।

> 'रूप को कितने तुम्हारे ही न जानें
> पर हृदय तो मैं अकेला जानता हूँ।'

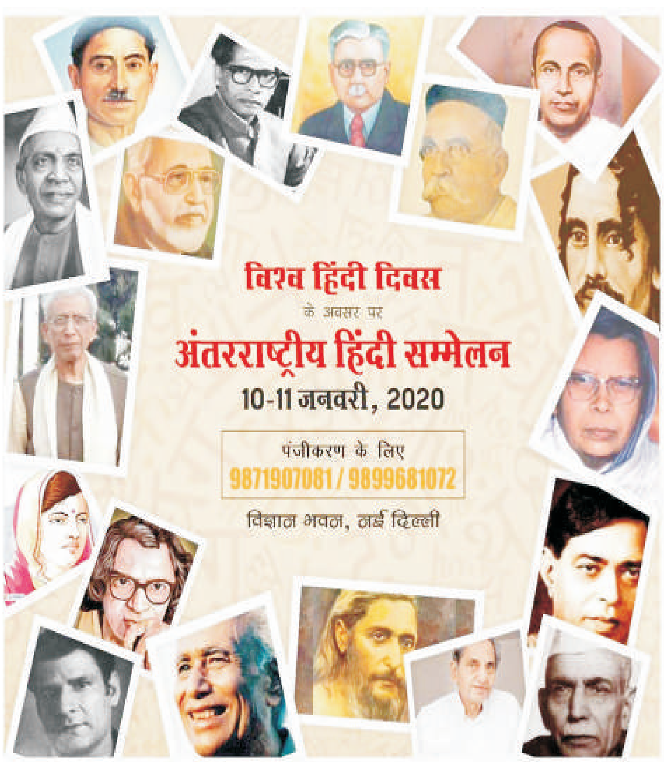

संवेदना और सुरेशचंद्र शुक्ल की कविताएं

प्रोफेसर निर्मला एस मौर्य, पूर्व कुलसचिव एवं विभागाध्यक्ष, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

संवेदनशील मन हृदय में एक टीस उत्पन्न करता है, यही टीस एक आम मानव को कलाकार बना देती है और वह अपने मन की भावनाओं और संवेदनाओं को अपनी कला के द्वारा अभिव्यक्ति देता है साहित्य सृजन भी इन्हीं कलाओं में एक कला है जिसे ललित कला माना जाता है। ईश्वर ने इतना सुंदर संसार रूपी उपवन दिया है जिसमें नाना प्रकार के पुष्प अपनी सुगंध फैला रहे हैं। मानव सृष्टि के साथ संगीत का उदय हुआ और संगीत से जुड़ा हुआ प्रसंग है काव्य। काव्य के तत्व-बुद्धि तत्व, कल्पना तत्व और भाव तत्व माने जाते हैं, जिनमें से भाव एवं कल्पना काव्य में प्रधान होते हैं। कवि हृदय की मार्मिक अनुभूतियों एवं भावों को उतार-चढ़ाव के साथ व्यक्त करता है तथा पाठक उसे पढ़ कर रस में डूब जाता है यही कारण है कि रचनाकार को किसी विशेष विषय या भाव की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। ऋग्वेद में तीन प्रकार के लोगों का वर्णन हुआ है- मार्गदर्शक अर्थात मार्ग दिखाने वाला, मार्ग ढूंढने वाला तथा मार्ग जानने वाला। सुरेशचंद्र शुक्ल एक ऐसे रचनाकार हैं जो मात्र मार्ग जानते या दिखाते ही नहीं अपितु मार्ग ढूंढने में भी विश्वास रखते हैं जो नया मार्ग खोजने में विश्वास रखते हैं वह जीवन में हिम्मत से आगे बढ़ते जाते हैं और सुरेश जी का जीवन इसका उत्कृष्ट उदाहरण है आप ऐसे कवि हैं जो धरती से जुड़े रहकर कविता करते हैं नार्वे में रहते हुए भी अपने देश और अपनी मातृभाषा हिंदी के प्रति उनका लगाव उन्हें वर्ष में न जाने कितनी बार भारत की धरती पर खींच लाता है संवेदना से सराबोर उनकी कविताएं जहाँ एक और समाज और मानव को अपने साथ लेकर चलती हैं वहीं दूसरी ओर उनकी सूक्ष्म दृष्टि से प्रेम के विभिन्न रूप भी छिपे नहीं रह पाए हैं। बचपन की अनेक रंग बिरंगी भूली बिसरी यादें इनकी कविताओं में संवेदनाओ के विभिन्न रूप लेकर बिखरी पड़ी हैं। कवि की कविताओं के केंद्र में

मनुष्य है, उसका संघर्ष है, जिजीविषा है और आस्था, सत्य तथा विश्वास है। तभी तो वह 'दीप जो बुझते नहीं' संग्रह की एक कविता 'सत्य के साथी में' कहते हैं-

सत्य के साथी कभी मरते नहीं।
समय के साथी कभी रुकते नहीं।।
जिंदगी चाहे कभी निढाल हो,
दुख समस्या ही भले विशाल हो।
मौत से भी जो कभी डरते नहीं,
सत्य के साथी कभी मरते नहीं।।

कहते हैं किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व को सजाने, सँवारने और निखारने में आत्मीय संबंधों और आत्मीय जनों का बड़ा योगदान होता है। सुरेश जी के व्यक्तित्व को निखारने और संवारने में उनके आत्मीय जनों का विशेष हाथ रहा है। उन्होंने संस्कार अपने परिवार से सीखे और इन्हीं संस्कारों ने उन्हें इंसानियत सिखाई। संस्कृति के साधक सुरेश जी 'नई चेतना' कविता में भारत के दो महान ग्रंथों रामायण और महाभारत को केंद्र में रखकर कलयुग के मानव मन में नई चेतना का संचार करते हैं। उनकी माँ ने उनके हृदय में जो संस्कारों के बीज बोए थे वह बीज आज भी उनके अंतरतम में विद्यमान हैं और मौका पाकर कविता, कहानी, नाटक के रूप में अंकुरित उठते हैं। आज की युवा पीढ़ी किस प्रकार दिग्भ्रमित और दिशाहीन होकर भटक रही है उससे कभी मन चिंतित होता है-

देश के ज्वलंत प्रश्नों का
जब तक हल नहीं करोगे।
तब तक कुटिल चक्रों में
तुम सदा हंसते रहोगे।।
बिलखते मानवों का सपना
कब तक कुचलते रहोगे।
स्वयं ले कौतूहल जगत का
हमको रुलाते रहोगे।

पत्रकारिता को अपना व्यवसाय बनाने वाले सुरेश जी हृदय से एक संवेदनशील रचनाकार हैं जिनकी अनुभूतियां, संवेदनाएं और अनुभव कविताओं, कहानियों और नाटकों के रूप में अभिव्यक्त हुए हैं वेदना, रजनी, नंगे पांव का सुख, दीप जो बुझते नहीं, संभावनाओं की तलाश, नीर में फंसे पंख, गंगा से ग्लोमा तक, आदि हिंदी के काव्य संग्रह उनकी अनुभूतियों को पंख देते हैं। अपनी मातृभाषा हिंदी को गौरवान्वित करने वाले सुरेश जी एक संवेदनशील और हिंदी के प्रति समर्पित साधक हैं उनकी कविताओं में रिश्तो का अहसास है, महिलाओं के प्रति मान और गौरव है। ओस्लो नार्वे में रहते हुए वह हिंदी और नॉर्वेजियन भाषा के बीच सेतु का कार्य कर रहे हैं यह कहना गलत नहीं होगा कि आप विदेश में देश के सिपाही हैं। सरल, सहज, संवेदनशील, सहृदय और मानवता में विश्वास करने वाले सुरेश जी एक ऐसे प्रवासी भारतीय हैं जो सबके स्नेह के भाजन भी हैं और

एक विलक्षण व्यक्तित्व-साहित्यकार मानव संवेदनाओं का सहभागी बनकर चलता है। श्री रामदरश मिश्र ने कहा था कि 'सर्जना मनुष्य के भावों, संवेदनाओं और विचारों की कलात्मक अन्विति है।' कवि की कविताएं अनवरत ऐसे मानव और मानवता की खोज में गतिशील रहती हैं जो आस्था और जिजीविषा को अपने मन में स्थान देते हैं-

सपने तोड़े जाने की,
यदि पीड़ा उनको होती।
कलियों के मसले जाने की,
पीर किसे सुख देती।
आवश्यकता की सीमा से,
यह मुक्त हृदय होने दो।
सबकी इच्छाएं पूरित हों,
यश-वैभव भर जाने दो।।
है अथक परिश्रम जिनका,
उनकी हर दिशा विभा हो।
जीवन मधु होम गगन में,
हर क्षण में आस उषा हो।।

भारत को अपने प्राणों में बताएं सुरेश जी 'हमारे प्राण सा भारत' में कहते हैं कि मैं भले ही अपने वतन से दूर हूँ फिर भी मेरे हृदय में मेरा वतन ही बसता है हमारा भारत स्वर्ग सा भारत है यहां की संस्कृति उदास है। वह सदैव अपनों के खोने के डर में जीते रहते हैं-

देखते रहते सदा हम,
हर समय वतन के सपने।
यों ही डरते रहते हैं,
कहीं खो जायें ना अपने।।

कविता शब्दों का जोड़-तोड़ नहीं बल्कि यह तो भावनाओं का अनवरत प्रवाह है जो अनायास ही पाठकों का मन अपनी ओर आकर्षित कर लेता है और उनके अंतर्मन को अपनी फुहारों से भिगो देता है। कवि की कविताएं सीधे आदमी से संवाद करती हैं-

व्यक्ति पूजा में लिपट तुम संकुचित होते रहोगे।
पाप अपने पूर्वजों का कब तलक धोते रहोगे।।
शव यात्री सिपाहियों को, समझो मत मुर्दा प्रिये।
नई पीढ़ी के कंधों पर, बोझ कब तक ढोते रहोगे।।

कवि का पारदर्शी व्यक्तित्व इन पंक्तियों में देखा जा सकता है-

जीवन में धैर्य समाए,
बस ध्येय पालना सीखा।
रस भर अपनापन भर के,
उपहास सालना सीखा।।

भारतीय नारी ही नहीं बल्कि समस्त नारी जाति के प्रति उनकी संवेदना कवि मानसिकता को प्रकट करती है। सत्य का साथ उन्होंने कभी छोड़ा नहीं और बदलते समय के साथ कदम बढ़ाते हुए पीछे कभी मुड़कर उन्होंने देखा नहीं-

सत्य के साथी कभी मरते नहीं ।
समय के साथी कभी रुकते नहीं।।
जिंदगी चाहे कभी निढाल हो,
दुख समस्या ही भले विशाल हो।
मौत से भी जो कभी डरते नहीं,
सत्य के साथी कभी मरते नहीं।।
जीवन में कभी धूप है कभी छांव,
कभी आंधी है कभी तूफान
किंतु सत्य के पथ पर चलने
वाले कभी डरते नहीं

और समय के साथ उनके कदम सदैव गतिमान रहते हैं। जलता हुआ दीप आशा का प्रतीक माना जाता है और सुरेश जी की कई कविताओं में दीपक को केंद्र में रखते हुए संवेदनाओं की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। केवल कविताएं ही नहीं बल्कि सुरेश जी की कहानियां भी सामाजिक विद्रूपताओं, बदलती- बिगड़ती राजनीति, अंधविश्वासों की धज्जियां उड़ाती दृष्टिगोचर होती हैं इनका समस्त रचना संसार केवल शब्दों की बयानबाजी नहीं, अपितु भावनाओं और विचारों का उत्कृष्ट तालमेल है। सुरेश चंद्र शुक्ल जी के व्यक्तित्व में संवेदना, दृढ़ता, मृदुलता और धैर्य का अद्भुत संतुलन दिखाई देता है। वह लेखक भी हैं पत्रकार भी, अध्यापक भी हैं और संपादक भी, समाज सेवी हैं और एक अच्छे इंसान भी। वह इन सब के साथ-साथ एक प्रभावशाली व्याख्याता भी हैं। उनकी भाव चेतना गंभीर, मार्मिक और संवेदनशील है और यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि उनके द्वारा निकाली जाने वाली पत्रिका स्पाइल-दर्पण विदेश में हिंदी प्रगति का दर्पण है। भारतीय संस्कृति से प्रेम और हिंदी से अगाध लगाव के कारण ही वह जहाँ एक और एक अच्छे पत्रकार हैं वहीं दूसरी ओर हिंदी सेवा के प्रति समर्पित हैं। टीवी फिल्म में अभिनय करने वाले सुरेश जी के व्यक्तित्व का एक पहलू फिल्म निर्माण भी है। जुझारू प्रवृत्ति कवि के व्यक्तित्व को अनोखा बनाती है। संघर्ष को उन्होंने अपने व्यक्तित्व में इस तरह ढाल लिया है कि यह संघर्ष उनके व्यक्तित्व को और धारदार बनाता है।

कवि का अंतद्वंद्व 'प्रवासी का अंतद्वंद्व' की पंक्तियों में ढलकर बोलता है-

बदल देना चुनाव में तुम अंकगणित,
चुनाव से पहले होना पड़ेगा संगठित।
रोजी-रोटी की सरकार हम लाएंगे,
जब बच्चे हमारे निशुल्क स्कूल जाएंगे।

किंतु कवि को यह शंका होती है कि क्या कभी ऐसा हो पाएगा? तभी तो वह कहते हैं यदि हम राजनीति के प्रति जागरूक नहीं होंगे तो हमें बार-बार भेड़ों की तरह हांका जाएगा तथा नोट, धर्म और जाति के नाम पर वोट मांगे जाएंगे और वफा के नाम पर कुत्तों से मारे जाएंगे। सर्जनात्मक ऊर्जा और मन की छटपटाहट व्यक्ति को एक ऐसे स्थान पर लाकर खड़ा कर देती है जहां रहकर वह इन गहरी अनुभूतियों में जीते हुए टूटता है, जुड़ता है और अपनी संवेदनाओं तथा जीवन की यथार्थता को एक नाम देता है। यही नाम कविता है। कवि की संवेदना में एक सौंदर्य झलकता है और बरबस ही पाठकों का मन अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

कवि मानवीय संवेदना को अपने अंतर्मन में समेटे हुए मनुष्य और सृष्टि का स्पर्श करते हैं। साहित्य केवल बुद्धि विलास का विषय नहीं है और यह जीवन की उपेक्षा करके भी जीवित नहीं रह सकता, सुरेश जी की कविताएं इस बात का साक्षात प्रमाण है उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि वह साहित्य के सच्चे उपासक हैं और उन्होंने कभी भी अपने देश की मिट्टी की उपेक्षा नहीं की उन्होंने एक तरफ बाह्य जगत के सौंदर्य और उसकी कुरूपता का ही वर्णन नहीं किया है अपितु आंतरिक सौंदर्य को भी रोपाई करने का प्रयास किया है, दो विरोधी तत्वों का सामंजस्य उनकी कविताओं का प्राण बिंदु है। कवि ने विचारों के धागे में संवेदनाओं के पुष्प गूँथे हैं।

विज्ञान और तकनीकी में भारत की १५ उपलब्धियाँ

१. कार्टोसैट-३ः भारत का पृथ्वी अवलोकन उपग्रह सफलतापूर्वक लॉन्च किया गया

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने कार्टोसैट -३ उपग्रह को २७ नवंबर २०१६ को प्रक्षेपित किया। कार्टोसैट -३ उपग्रह को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से PSLV&C४७ की मदद से लॉन्च किया गया था। PSLV&C४७ १३ अमेरिकी उपग्रहों को भी अंतरिक्ष में ले जा रहा था। इसरो ने इस उपग्रह को लहन्च करने के साथ ही इतिहास बनाया है क्योंकि यह अंतरिक्ष से किसी भी वस्तु की निकटतम तस्वीरें लेने में सक्षम है।

कार्टोसैट -३ उच्च-रिजहल्यूशन इमेजिंग क्षमता से लैस है। कार्टोसैट -३ एक सुदूर संवेदन या पृथ्वी का अवलोकन उपग्रह है। यह उपग्रह भारत की सीमाओं और प्राकृतिक आपदाओं की निगरानी में भी मदद करेगा। इसे ६७.५ डिग्री के झुकाव पर ५०६ किमी की कक्षा में रखा जाएगा।

२. चंद्रयान -२ः विक्रम चंद्रमा पर नहीं जा सकता था लेकिन अखंड पाया गया

६ सितम्बर २०१६।

चंद्रयान -२ ऑर्बिटर चंद्रमा की सतह पर झुका हुआ पाया गया। विक्रम लैंडर अपने नियोजित लैंडिंग स्थल से लगभग ५०० मीटर दूर चंद्रमा की सतह पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। भारतीय

अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अनुसार, लैंडर 'विक्रम' चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव की ओर बढ़ रहा था और इसकी सतह को छूने से कुछ ही सेकंड दूर था जब यह २.१ किमी ऊपर होने पर चांद की जमीन से सम्पर्क टूट गया था।

चंद्रयान -२ का ऑर्बिटर चंद्रमा से लगभग १०० किमी ऊपर रखा गया था। ऑर्बिटर में आठ पेलोड, तीन लैंडर और दो रोवर्स होते हैं। ऑर्बिटर एक साल तक चंद्रमा का चक्कर लगाता रहेगा। यह एक उच्च-रिजॉल्यूशन कैमरे की मदद से चंद्रमा की थर्मल छवियां भी लेगा और पृथ्वी पर इसरो के मिशन नियंत्रण कक्ष में भेजेगा।

३. गगनयान मिशनः रूस में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए संभावित अंतरिक्ष यात्री

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) चंद्रयान -२ के बाद गगनयान मिशन के लिए कमर कस रहा है। इसरो अपने महत्वाकांक्षी मिशन गगनयान के लिए युद्धस्तर पर तैयारी में लगा हुआ है। यह इसरो का पहला मानवयुक्त अंतरिक्ष मिशन होगा जिसे २०२२ तक लॉन्च किया जाना प्रस्तावित है।

मिशन गगनयान के लिए अंतरिक्ष यात्रियों के चयन की आयु सीमा ३० वर्ष निर्धारित की गई थी, लेकिन इस आयु वर्ग में से कोई भी प्रारंभिक परीक्षा को मंजूरी नहीं दे सका। उसके बाद, आयु सीमा बढ़ाकर ४१ वर्ष कर दी गई। वर्तमान में अंतरिक्ष यान में लाइफ सपोर्ट सिस्टम, हेल्थ मॉनिटरिंग सिस्टम और एयरक्राफ्ट सपोर्ट सिस्टम को अंतिम रूप दिया जा रहा है। २०१८ में, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से मिशन गगनयान के बारे में घोषणा की।

४. गंगा में होने वाली सूक्ष्म विविधता का अध्ययन

केंद्र सरकार ने हाल ही में गंगा की संपूर्ण लंबाई के साथ सूक्ष्म विविधता की समीक्षा के लिए अध्ययन करने के लिए ६.३ रु. करोड़। शोधकर्ताओं का मानना है कि २,५०० किलोमीटर लंबी नदी में ऐसे कीटाणु होते हैं जो 'एंटीबायोटिक प्रतिरोध' को बढ़ावा दे सकते हैं।

इस अध्ययन का उद्देश्य एंटीबायोटिक प्रतिरोध से 'मानव जीवन के लिए खतरों' को पहचानना है। अध्ययन में जानवरों के आंतों में मौजूद विभिन्न प्रकार के जीवाणुओं के स्रोतों का पता लगाने की भी कोशिश की जाएगी जिन्हें एस्चेरिचिया कोलाई कहा जाता है।

५. इसरो २०३० तक अपना अंतरिक्ष स्टेशन शुरू करेगा

इसरो ने गगनयान मिशन के बाद भारत के अंतरिक्ष स्टेशन की स्थापना की योजना पर काम शुरू करने का फैसला किया है। भारत २०२२ तक पहली बार अंतरिक्ष यात्रियों को गगनयान मिशन के तहत अंतरिक्ष में भेजेगा। उसके बाद, २०३० तक, अंतरिक्ष स्टेशन को लॉन्च करने के लिए तैयार किया जाएगा। इसरो प्रमुख के सिवन ने कहा कि हमारा अंतरिक्ष स्टेशन पहले की तुलना में छोटा होगा। हम एक मॉड्यूल लॉन्च करेंगे। इसका उपयोग माइक्रोग्रैविटी में किया जाएगा। इसका वजन लगभग २० टन होगा।

ISRO सरकार की सहमति के लिए यह प्रस्ताव भेजेगा इसके पूरा होने में ५ से ७ साल लगेंगे। अमेरिका और रूस ने १६६८ में एक संयुक्त परियोजना के रूप में अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) का निर्माण किया। चीन ने दो अंतरिक्ष स्टेशन तियांगोंग -१ और तियांगोंग -२ लॉन्च किए हैं। अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) पृथ्वी से

४०० किलोमीटर ऊपर स्थित है।

६. भारत केजी, मोल और केल्विन की नई मानक परिभाषा को स्वीकार करता है

भारत ने सात आधार इकाइयों में से चार को फिर से परिभाषित करने के लिए एक वैश्विक प्रस्ताव स्वीकार किया - किलोग्राम, केल्विन, तिल और एम्पीयर। इस कदम से पाठ्यपुस्तकों में बदलाव सहित दूरगामी प्रभाव होंगे। यह एक प्रस्ताव में तय किया गया था। पिछले साल पेरिस में आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में यह घोषणा की गई थी कि ६० देशों के प्रतिनिधियों ने सात आधार इकाइयों में से चार को फिर से परिभाषित करने का प्रस्ताव पारित किया।

नव परिभाषित इकाई २० मई २०१९ यानि वर्ल्ड मेट्रोलॉजी डे (WMD) पर लागू हो गई है। विश्व मेट्रोलोजी दिवस उसी दिन मनाया जाता है जब सत्रह देशों के प्रतिनिधियों द्वारा २० मई १८७५ को मीटर कन्वेंशन पर हस्ताक्षर किए गए थे। इन नई परिभाषाओं का आम जनता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा लेकिन यह वैज्ञानिक प्रयोगों को प्रभावित करेगी।

७. सरकार जीएसएलवी चरण -४ कार्यक्रम की निरंतरता को मंजूरी देती है

जीएसएलवी कार्यक्रम - चरण ४ भू-इमेजिंग, नेविगेशन, डेटा रिले संचार और अंतरिक्ष विज्ञान के लिए दो-टन के उपग्रहों को लॉन्च करने की क्षमता प्रदान करेगा। चौथे चरण में २०२१-२४ की अवधि के दौरान पांच जीएसएलवी उड़ानें शामिल हैं। इस मिशन के लिए कुल २९७.१३ करोड़ रुपये की आवश्यकता होगी, जिसमें ५ जीएसएलवी वाहन, आवश्यक सुविधाओं में वृद्धि, कार्यक्रम प्रबंधन और लॉन्च अभियान लागत शामिल हैं।

यह अगले मंगल मिशन के संबंध में महत्वपूर्ण उपग्रह नेविगेशन सेवाओं, भारतीय मानवयुक्त अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम और संचार रिले से संबंधित उपग्रहों में मदद करेगा। इससे घरेलू स्तर पर भी उत्पादन जारी रखना सुनिश्चित होगा। जीएसएलवी निरंतरता कार्यक्रम को २००३ में मंजूरी दी गई थी और दो चरणों को पूरा किया गया है। तीसरा चरण प्रगति पर है और २०२०-२१ की चौथी तिमाही में पूरा होने की उम्मीद है।

८. पदार्थ की एक नई स्थिति की खोज की

स्कॉटलैंड के एडिनबर्ग विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने पोटेशियम की जांच करते हुए भौतिक पदार्थ की एक नई स्थिति की खोज की है। यह पाया गया कि इस मामले में परमाणु एक ही समय में ठोस और तरल दोनों के रूप में मौजूद हो सकते हैं। खोज शक्तिशाली कंप्यूटर सिमुलेशन का उपयोग करके की गई थी। वैज्ञानिकों ने घोषणा की कि चेन-पिघलने की स्थिति में परमाणु एक ही समय में ठोस और तरल दोनों हैं।

वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि जब पोटेशियम पर अत्यधिक दबाव और तापमान लागू किया जाता है, तो यह एक ऐसी स्थिति बना सकता है जिसमें अधिकांश परमाणु एक जाली संरचना बनाते हैं लेकिन एक दूसरा सेट द्रव व्यवस्था में होता है। वैज्ञानिकों ने कहा कि यह ऐसा होगा जैसे कोई स्पंज पकड़ रहा हो जो पानी से भरा हो, इसके अलावा, स्पंज पानी से बना है।

९. इसरो ने छात्रों के लिए 'युवा वैज्ञानिक कार्यक्रम' शुरू किया

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने इस वर्ष से स्कूली बच्चों के लिए 'युवा वैज्ञानिक कार्यक्रम' (युविका) नामक एक विशेष कार्यक्रम शुरू किया है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य मुख्य रूप से अंतरिक्ष गतिविधियों के उभरते क्षेत्रों में अपनी रुचि जगाने के इरादे से युवाओं को अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष विज्ञान और अंतरिक्ष अनुप्रयोगों पर बुनियादी ज्ञान प्रदान करना है।

बच्चों का चयन उनके शैक्षिक प्रदर्शन और गैर-शैक्षणिक गतिविधियों के आधार पर किया जाएगा। इस कार्यक्रम में ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों के का चयन को प्राथमिकता दी जायेगी, तब चयन किया जाएगा। इसरो के अध्यक्ष सिवन ने कहा, 'छात्रों को इसरो और बेंगलुरु सुविधा केंद्रों में ले जाया जाएगा। इसके अलावा, उन्हें श्रीहरिकोटा के लॉन्च सेंटर और लैब में भी ले जाया जाएगा। छात्रों को छोटे उपग्रह बनाने का अवसर भी दिया जाएगा।

१०. इसरो ने सफलतापूर्वक इलेक्ट्रॉनिक इंटेलिजेंस उपग्रह एमिसैट लॉन्च किया

भारतीय रॉकेट पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (PSLV) की मदद से ISRO ने इलेक्ट्रॉनिक इंटेलिजेंस सैटेलाइट EMISAT लॉन्च किया। EMISAT को रक्षा अनुसंधान विकास संगठन (DRDO) के लिए लॉन्च किया गया था। सीमा पर आवाजाही पर नजर रखने के लिए EMISAT भी बहुत महत्वपूर्ण है।

इसका मुख्य उद्देश्य पाकिस्तान की सीमा पर इलेक्ट्रॉनिक या किसी भी तरह की मानव गतिविधि की निगरानी करना है। साथ ही, यह उपग्रह सीमा पर रडार और सेंसर की निगरानी करेगा। यह उपग्रह न केवल इलेक्ट्रॉनिक बल्कि सीमा क्षेत्र में मानवीय गतिविधियों का भी निरीक्षण करेगा। इससे पहले, ISRO ने DRDO के लिए माइक्रोसैट आर लॉन्च किया था।

११. संचार उपग्रह जीसैट -३१ को फ्रेंच गयाना से लॉन्च किया गया

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने ५ फरवरी, २०१९ को फ्रेंच गुयाना के अंतरिक्ष केंद्र से

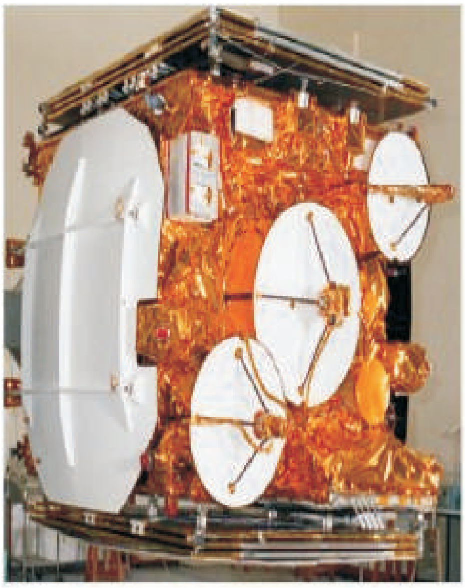

अपने ४० वें संचार उपग्रह जीसैट -३१ का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया। इसरो द्वारा जारी सूचना के अनुसार, उपग्रह की आयु १५ वर्ष है। यह उपग्रह कक्षा के अंदर कुछ उपग्रहों के लिए परिचालन सेवाओं में मदद करेगा और भूस्थैतिक कक्षा में कू-बैंड ट्रांसपोंडर की क्षमता बढ़ाएगा।

२,५३५ किलोग्राम वजन वाले उपग्रह को रॉकेट एरियन -५ (वीए २४७) के माध्यम से गुयाना स्पेस सेंटर (सीएसजी) में कौरू लॉन्च बेस से लॉन्च किया गया था। जीसैट -३१ का उपयोग वीएसएटी नेटवर्क, टेलीविजन अपलिंक, डिजिटल उपग्रह समाचार सभा, डीटीएच टेलीविजन सेवाओं और सेलुलर बैक हॉल कनेक्टिविटी और अन्य सेवाओं के बीच किया जाएगा।

गगनयान मिशन के लिए मानव अंतरिक्ष उड़ान केंद्र

१२. इसरो ISRO ने बैंगलोर में भारत का पहला मानव अंतरिक्ष उड़ान केंद्र स्थापित किया है। यह केंद्र २०२२ के अंत तक पहला मानव अंतरिक्ष मिशन शुरू करेगा। इस मानव मिशन में एक महिला अंतरिक्ष यात्री शामिल होगी। पहला मानव रहित मिशन दिसंबर २०२० में भेजा जाएगा और दूसरा मिशन २०२२ में भेजा जाएगा।

बैंगलोर में मानव अंतरिक्ष उड़ान केंद्र (एचएसएफसी) का उद्घाटन किया गया। एस। उन्नीकृष्णन एचएसएफसी के संस्थापक-निदेशक हैं। केंद्रीय मंत्रिमंडल पहले ही रुपये के बजट को मंजूरी दे चुका है। इस परियोजना के लिए ६०२३ करोड़। यह केंद्र गगनयान परियोजना के कार्यान्वयन के लिए जिम्मेदार होगा।

१३. इसरो ने दुनिया का सबसे छोटा कलाम सैट, माइक्रोसैट-आर उपग्रह लॉन्च किया

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने दुनिया के सबसे हल्के उपग्रह - कलाम SAT V२ को पृथ्वी की कक्षा में रखा है। इसके साथ ही इमेजिंग सैटेलाइट माइक्रोसेट-आर को भी अंतरिक्ष में भेजा गया है। इन दोनों उपग्रहों को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से PSLV ४४ प्रक्षेपण यान के माध्यम से प्रक्षेपित किया गया।

कलाम सैट, चेन्नई स्थित अंतरिक्ष शिक्षा फर्म, स्पेस किड्स इंडिया द्वारा बनाया गया था। इस उपग्रह का उपयोग हैम रेडियो ट्रांसमिशन (शौकिया

रेडियो प्रसारण) के संचार उपग्रह के रूप में किया जाएगा। हैम रेडियो ट्रांसमिशन एक प्रकार का वायरलेस संचार है जिसका उपयोग गैर-पेशेवर गतिविधियों में किया जाता है।

सरकार ने डीडी साइंस और इंडिया साइंस चैनल लॉन्च किए

१४. डीडी साइंस डीडी नेशनल पर प्रसारित होगा।

डीडी साइंस सोमवार से शनिवार शाम ५ बजे-शाम ६ बजे तक डीडी नेशनल पर प्रसारित होगा। इसे हर दिन एक घंटे तक देखा जा सकता है। भारत विज्ञान एक ऑनलाइन चैनल है। यह सभी इंटरनेट-सक्षम उपकरणों पर आसानी से देखा जा सकता है। खास बात यह है कि यह लाइव, शेड्यूल प्ले और वीडियो-ऑन-डिमांड साइंस प्रोग्रामिंग प्रदान करता है।

डीडी साइंस और इंडिया साइंस चैनल विज्ञान-आधारित वृत्तचित्र, स्टूडियो-आधारित चर्चा और वैज्ञानिक संस्थानों, साक्षात्कार और लघु फिल्मों के वर्चुअल वॉक-F: की सुविधा प्रदान करेंगे। ये दोनों चैनल लोगों को विज्ञान के लाभों को समझने में मदद करेंगे।

१५. DRDO ने एस्ट्रा मिसाइल का सफल परीक्षण किया

भारत ने कम दूरी की हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइल एस्ट्रा का सफल परीक्षण किया। इस मिसाइल की रेंज २५ से ४० किमी है। बूस्टर इंजन का उपयोग करके हथियार का परीक्षण किया गया था। इस मिसाइल को रक्षा अनुसंधान विकास संगठन (DRDO) द्वारा विकसित किया गया था।

यह मिसाइल अमेरिका पर ९/११ के आतंकवादी हमलों के बाद महानगरीय शहरों के लिए त्रिस्तरीय रक्षा प्रणाली को ध्यान में रखते हुए विकसित की गई थी। भारत ने अब रूस और अमेरिका के बाद एक अत्याधुनिक शॉर्ट-रेंजेड मिसाइल विकसित की है।

सुंदर पुरुष, बहादुर स्त्रियाँ

ज्ञानेंद्रनाथ त्रिपाठी, टोक्यो, जापान

धीरे-धीरे मुझे ये यकीन हो गया है
कि दुनिया के सारे सुंदर पुरुष
खाना पकाने में कुशल होते हैं
क्यों कि सुंदर वही होता है
जो भीतर मन से पका हुआ (परिपक्व) हो
जो खुद को पकाने में कुशल हो
और दुनिया की सारी बहादुर
स्त्रियाँ निकलती हैं
घर से बिना परवाह किए
कि कौन सोचता है, या कहता है
क्योंकि बहादुर वही होता है
जो स्वयं को यूँ जीत ले
कि दूसरों की परवाह न करे
दुनियाँ के सारे सुंदर पुरूष
हार जाते हैं बहादुर स्त्रियों से
प्रेम में हार जाना ही जीत है।
निकलती हैं, घर से बिना परवाह किए
कि कौन क्या सोचता है, या कहता है
क्योंकि बहादुर वही होता है
जो स्वयं को यूँ जीत ले
कि दूसरों की परवाह न करे
दुनियाँ के सारे सुंदर पुरूष
हार जाते है बहादुर स्त्रियों से
प्रेम में हार जाना ही जीत है।

अर्थों का दिवंगत होना

डा. गिरिराजशरण अग्रवाल

बाबू चंडीप्रसाद अपने जमाने के बड़े ही अद्‌भुत आदमी थे। और सब तो अपनी माई के लाल होते हैं, वह रजाई के लाल थे। 'रजाई' शब्द हमने जानबूझकर प्रयोग किया है, क्योंकि चंडीप्रसाद स्वयं भी प्रचलित शब्दों और मुहावरों के कट्टर विरोधी थे। फिर चंडीप्रसाद जैसे माई के लाल पर 'रजाई का लाल' मुहावरा ही फिट बैठता है, 'गुदड़ी का लाल' नहीं। इस बात को आप जानते ही हैं कि रजाई यदि अपने-आपमें मध्यम वर्ग की द्योतक है तो गुदड़ी निम्न वर्ग की। साथ ही यह बात भी आप भली-भाँति जानते हैं कि गुदड़ीवाला निम्नवर्ग

राजनीतिक खिलाडियों की खेल- प्रतियोगिता में फुटबाल का काम करता है। एक पक्ष के खिलाड़ियों द्वारा किक मारी गई तो इधर, दूसरे खिलाड़ियों के द्वारा ठोकर मारी गई तो उधर। भारी गुत्थम-गुत्था के बाद अगर कोई पक्ष गोल दागने में सफल हो जाए तो सफल पक्ष सत्ताधारी, असफल रह जाने वाली टीम विपक्ष की मारा-मारी। रह गई फुटबाल तो अगली प्रतियोगिता तक उसका कोई काम, कोई महत्त्व नहीं। वह या तो क्रीड़ा-सामग्री के भंडार में चुपचाप पड़ी रहेगी अथवा समय-समय पर फूँक भरने के काम आएगी। फुटबाल और जनता फूँक भरने के लिए और खेल-प्रतियोगिता के दौरान किक मारने के लिए ही होती है।

क्षमा कीजिए, हमने जनता बनाम फुटबाल की यह व्याख्या अपनी बुद्धि से नहीं की है। चंडीप्रसाद जी की बुद्धि सक्रिय रही है इस कार्य में। चंडीप्रसाद बेचारे अपने अंतिम दिनों में एक नया शब्दकोश संकलित कर रहे थे कि समय से पहले ही भगवान् को प्यारे हो गए। आपको यह बात भी याद दिलाना अच्छा रहेगा कि ऐसे श्रजाई के लालश, जिन्हें समाज दिखावे के लिए भी प्यार नहीं करता, समय से पहले ही भगवान् को प्यारे हो जाते हैं। यह बात अलग है कि प्यार तो उन्हें भगवान् भी नहीं करता, पर वे वन-वे वाला इश्क करते हुए भगवान् की झोली या उसकी खोली में पहुँच ही जाते हैं।

अब आपको यह जानकर दुख या

आश्चर्य नहीं होगा कि चंडीप्रसाद जी ने शब्दकोश लिखते-लिखते अचानक आत्महत्या कर ली और धींगामुस्ती करके जबरन भगवान को प्यारे हो गए।

जब तक चंडीप्रसाद जीते रहे, ट्यूशन पढ़ाकर गुजारा करते रहे। लेकिन हमें अंत तक यह आश्चर्य रहा कि चंडीप्रसाद जी को ट्यूशन मिल कैसे जाते थे? यह आश्चर्य उस व़क्त भी है, जब चंडीप्रसााद धाँधली से भगवान को प्यारे हो चुके हैं। यह भी अजीब बात है कि आदमी लोक परलोक चला जाता है लेकिन आश्चर्य छोड़ जाता है। बाबू चंडीप्रसाद भी विरासत में दो चीजें छोड़ गए। एक तो आश्चर्यचकित कर देनेवाला अपना अधूरा शब्दकोश और दूसरा हाफ कोट यानी बंडी। चंडीप्रसाद जब तक जीवित रहे, बंडी जुड़वाँ बच्चों की तरह उनके साथ चिपकी रही। सच कहें तो चंडी और बंडी एक-दूसरे के पूरक थे, बंडी के बगैर चंडीप्रसाद चंडीप्रसाद नहीं लगते थे। ऐसा लगता था जैसे वह चंडीप्रसाद होकर भी चंडीप्रसाद होने का ढोंग कर रहे हों। यही कारण था कि लोग चंडीप्रसाद की जगह उन्हें बंडीप्रसाद कहने लगे थे। लेकिन सामने नहीं, पीछे-पीछे। क्योंकि हमारे यहाँ सच्ची बात सिर्फ पीठ-पीछे कही जाती है, सामने सच्ची बात कहने वाले या तो पागल होते हैं या मूर्ख अथवा दोनों का मिश्रण।

चंडीप्रसाद जी पागल थे या मूर्ख या दोनों का मिश्रण, यह तो हम नहीं कह सकते, पर इतना अवश्य कह सकते हैं कि और बहुतों की तरह चूँकि वह भी मुँह-दर-मुँह होकर सच नहीं बोल सकते थे, इसलिए लिखकर सच बोलते थे। इस सच बोलने में चंडीप्रसाद की बंडी हमेशा उनकी सहायक बनी रही। बंडी की बगली जेबों से कागजों का जो पुलिंदा प्राप्त हुआ, वह दो बातें सिद्ध करता है, एक तो यह कि घाघ टाइप के लोग सच को बगल में दबाकर रखते हैं और उनके मरने पर सच का जो पुलिंदा सामने आता है, वह भयंकर विस्फोट करने के लिए काफी होता है।

उदाहरण के लिए चंडीप्रसाद जी ने अपने अपूर्ण शब्दकोश की भूमिका बाँधते हुए लिखा था कि अब समय आ गया है कि हिंदी का पूरा शब्दकोश संशोधित करके दोबारा लिखा जाए। संशोधित करने की बात को सिद्ध करते हुए चंडीप्रसाद ने लिखा कि जब भारत का संविधान एक बार नहीं दर्जनों बार संशोधित किया जा सकता है तो शब्दकोश में आवश्यक संशोधन क्यों नहीं हो सकते? चंडीप्रसाद जी ने अपनी भूमिका में लिखा है कि मातृभूमि के अतिरिक्त कभी कोई और भूमि मेरे पास नहीं रही, इसलिए सदा भूमिकाओं पर ही संतोष करना पड़ा। चंडीप्रसाद जी ने लिखा है कि मैंने जीवन-भर कभी कोई किताब पूरी तरह नहीं पढ़ी, किताबों की भूमिकाएँ पढ़कर ही अपनी भूमिहीनता की संतुष्टि करता रहा। पर जीवन के अंतिम चरण में मैंने इस रहस्य को समझा कि भूमि अपनी हो तो जैसी भी हो, जोतनेवाले को फसल मिल ही जाती है, किंतु यह जो भूमि का पहृकिट एडीशन भूमिका है, इससे तो भ्रम और भटकाव के अतिरिक्त कोई और फसल मिलती ही नहीं। हमारा विचार है कि चंडीप्रसाद को भूमिकाएँ

पढ़ते-पढ़ते ही एक नया शब्दकोश लिखने का विचार आया था। लेकिन उन्हें खतरे का भी पूरी तरह अनुमान था कि उनके द्वारा लिखे जा रहे शब्दकोश को देश के धनकोश वाले महापुरुष स्वीकार नहीं करेंगे, क्योंकि प्रचलित अर्थों वाले शब्दों से उनके स्वार्थ जुड़े हैं।

चंडीप्रसाद ने अपनी भूमिका में यह भी लिखा है कि प्रचलित शब्दों की नई व्याख्या इसलिए भी जरूरी हो गई है कि शब्द अब सच को छिपाने अथवा सुननेवालों को भ्रमित करने अथवा धोखा देने के लिए प्रयुक्त होने लगे हैं। उनके अनुसार यह त्रासदी गुदड़ीवाले यानी जनसाधारण अधिक झेल रहे हैं। वे अपनी अज्ञानता और अज्ञानता से भी अधिक सरलता के कारण शब्दों के आज भी ठीक वही अर्थ लेते हैं, जो पुराने शब्दकोशों में लिखे हैं। इसलिए पछताते हैं और उस समय पछतावे से कुछ होता नहीं, जब चिड़ियाँ खेत चुगकर चली जाती हैं। चंडीप्रसाद ने चिड़ियों का खुलासा नहीं किया। चिड़ियों से शायद उनका अभिप्राय बिना पंख के उड़ने वाले उन जंतुओं से है, जो उड़ते तो हैं, किंतु उड़ते हुए दिखाई नहीं देते।

लंबी भूमिका के अतिरिक्त चंडीप्रसाद जी की जेब से जो एक छोटा-सा पुर्जा बरामद हुआ, उसमें पुराने शब्दों की नई लेकिन विस्तृत व्याख्या की गई है। उदाहरण के रूप में कुछ शब्दों के सच्चे-सही अर्थ आप भी देखिए-

प्रेम : व्यक्तिगत स्वार्थ का एक अटपटा शब्द, जिसमें दोनों ही अपना- अपना सुख लाभ एक-दूसरे के जीवन में खोजने और प्राप्त करने के लिए सदैव एक-दूसरे को भ्रमित करते रहते हैं। ब्रैकिट में चंडीप्रसाद ने लिखा है, मानव-जाति के पास इससे ज्यादा दिखावटी और बनावटी शब्द और कोई नहीं है।

धर्म : विधि-विधान की एक ऐसी व्यवस्था, जिसे अपने सामयिक हितों के लिए मन-मरजी के अनुसार तोड़ा-मरोड़ा जा सकता हो। यह धर्मात्माओं, समाज-सुधारकों, राजनेताओं के हाथ की लाठी भी है, जिसके द्वारा वे हम सबको हाँकने का सफल प्रयास करते हैं। यह मानव-प्रेम के नाम से दानव-प्रेम की ओर ले जाता है, लेकिन इसके प्रेमी-प्रेमिकाएँ समझते यही हैं कि वे धर्म- प्रेम का प्रचार कर रहे हैं। इसे सरल भाषा में हाथी के दाँत भी कहा जा सकता है, जो खाने के और होते हैं, दिखाने के और।

राजनीति : नीति शब्द इसमें केवल सुंदरता बढ़ाने के लिए जोड़ दिया गया है। जैसे अँगूठी में लाल-नीला नग जोड़ दिया जाता है। वैसे यह राज़काज ही है, नीति से इसका कोई लेना-देना नहीं है। क्योंकि नीति क्षण-क्षण बदलती रहती है, जबकि राज स्थायी रूप से सदा चलता रहता है। इसलिए नीतिविहीन राज का अर्थ होता है-निराज। कुल मिलाकर राजनीति को संशोधित कर निराजनीति कर दिया जाना चाहिए। यह अति आवश्यक है।

देश प्रेम : निर्वस्त्र होकर देश को नंगा करना। वैसे भी प्रेम की वासना अपने अंतिम चरण में एक-दूसरे को निर्वस्त्र करने पर उतारू हो जाती है, इसी अनिवार्यता पर चलते हुए अधिकतर देशप्रेमी देश के कपड़े उतारकर अंत में स्वयं भी निर्वस्त्र होकर नृत्य करते दिखाई देते हैं।

लोकतंत्र : आधुनिक दुनिया का सबसे लोकप्रिय खिलौना, जो कई देशों को खून की भेंट देकर प्राप्त हुआ। यह बच्चों को दिए जाने वाले झुनझुने से अलग प्रकार का एक झुनझुना है। टीन से बने झुनझुने से बच्चे तथा शब्दों से बने इस झुनझुने से सभी प्रौढ़ पुरुष-नारियाँ एवं वृद्ध लोग खेलते हैं और मदारी के इशारे पर जमूरों की तरह नाचते हैं। इसमें समस्याएँ उत्पन्न की जाती हैं, हल नहीं की जातीं। सर्वश्रेष्ठ लोकतंत्र वह होता है, जिसमें लोगों को गाली देने और गोली खाने की आजादी है। फिर भी लोग झुनझुना बजाते रहें और खेलकर दिल बहलाते रहें।

मानव-अधिकार : अधिकारहीन लोगों द्वारा खड़ा किया गया ऐसा बखेड़ा, जिसका वास्तव में कोई अर्थ नहीं है। पिछले लंबे समय से इस शब्द को नया अर्थ देने का प्रयास किया जा रहा है। लेकिन यह अर्थ को ग्रहण नहीं कर पा रहा है। इसलिए मानव-अधिकार का मतलब है-चीख-पुकार, शोर-शराबा, हाहाकार।

मंत्रिमंडल : राजा-महाराजाओं का संग्रह। सामंतशाही में राजा एक होता था, लोकशाही में अनेक राजा होते हैं। पहले एक अकेला राजा खाता था, अब कई मिल-बैठकर खाते हैं। खाने की क्रिया एक-जैसी है। बस खाने वालों की संख्या बढ़ गई है।

विपक्ष : सिर्फ गलत को ही गलत नहीं, सही को भी गलत सिद्ध करके अपनी उपस्थिति दर्ज कराने वाला महा अनुभवियों का वह गिरोह, जिसका अपना कोई चूल्हा नहीं होता। वह हमेशा दूसरों के चूल्हों पर अपनी रोटियाँ सेंकता है। अगर देश में कहीं कोई और बढ़या चूल्हा उपलब्ध न हो तो वह सीता मैया की रसोई में भी घुसने से नहीं चूकता।

स्पष्टवादिता : चापलूसी की एक अद्‌भुत प्रणाली। कहा जाता है कि एक सज्जन किसी बहुत बड़े धन्नासेठ के पास कोई आवश्यक काम लेकर पहुँचे। वह जानते थे कि सेठ जी बहुत कट्टर सिद्धांतवादी आदमी हैं, मक्खनबाजी से चिढ़ते हैं और दुत्कारकर निकाल देते हैं। यह सज्जन ठहरे एक काइयाँ आदमी, आए और अभिवादन के उपरांत तुरंत बोले-'सेठ जी, ये गुण तो लाख टके का है आपमें कि आप खुशामदियों के पास नहीं फटकने देते। आप दूर से ही उन्हें फटकार देते हैं।' सेठ जी ने अपनी प्रशंसा सुनी तो गद्‌गद् हो उठे और आगंतुक का कार्य चुटकी बजाते कर दिया। स्पष्टवादिता की यह प्रणाली लाभदायक भी है और सम्मानजनक भी।

नमूने के इन शब्दों और उनके नवीनतम अर्थों को देखते हुए अब हम आपको यह बताना चाहेंगे कि बाबू चंडीप्रसाद ने अपने शब्दकोश की चर्चा करते हुए यह भी लिखा था कि मानवजाति के उपयोग में आनेवाले सारे ही शब्द पिछली एक शताब्दी से झूठ की लंबी खूँटी पर उलटे लटके हुए थे, जैसे आपने देखा होगा कि पुराने घरों में चिमगादड़ें उलटी लटकी रहती हैं। मैंने और कुछ नहीं किया, बस शब्दों के अर्थों को उनकी खूँटियों पर सीधा लटका दिया है। चंडीप्रसाद ने यह भी लिखा है कि झूठ को एकदम सच की तरह बोलने की प्रयोगात्मक कला, जो वर्तमान आदमी की अद्‌भुत विशेषता बन गई है, गहरे शोध और अनुसंधान का विषय है। अगर यह अनुसंधान न किया गया तो शब्दों के असली अर्थ इसी तरह दिवंगत हो जाएँगे, जिस तरह मृत आदमी की आत्मा दिवंगत हो जाती है।

राष्ट्रीय बोधगीत

डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी

भारत की स्वाधीन भारती
जीवन के सरगम सुधारती
सदियों के सपने सँवारती
जनगण के स्वर में पुकारती
पार्थ स्वयं कर रहे आरती
स्वयं जनार्दन आज सारथी
दुस्तर बीहड़ पथ है तो क्या
देश हमारा सबसे न्यारा
केवल अपनी नहीं विश्व की
आज़ादी का भाग्य संवारा
इसीलिए हम कहते आए
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
आज़ादी के दीप्त भाल पर
अक्षत तिलक लगाना होगा
मिल जुल कर, श्रम से श्रृद्धा से
माँ का कर्ज़ चुकाना होगा
संविधान के संकल्पों को
निष्ठा सहित निभाना होगा
आओ हम जय घोष करेंगे
जनगण मन में जोश भरेंगे
जय भारत जय जगत कहेंगे
मनुज धर्म का वरण करेंगे
सत्य अहिंसा विश्व बँधुता
इस धरती पर चरण धरेंगे।

कलेन्डर

डॉ. त्रिभुवन नाथ शुक्ल

जीवन दीवार पर टँगा हुआ कलेंडर है।
दिसंबर से जनवरी
फिर जनवरी से दिसंबर का
ऋतुचक्र, प्रतिदिन घटता जीववन
उत्तरायण से दक्षिणायन की तरह,
एक अनाहूत भय, करता मन को व्यग्र
सोचता हूँ जो हुआ इस जीवन से,
कितना है सत्य वह

लम्हें जिन्दगी के

अमर जीत 'अंजान', ओस्लो, नार्वे

किसी के दुखों को, गले लगा कर तो देखो,
हर सुख तुम्हें, बेहद करीब लगने लगेंगे।
कभी काँटों को, अपना बना कर तो देखो,
फूल खुद-ब-खुद, तुमसे प्यार करने लगेंगे।
कभी भटकों को, राह दिखाकर तो देखो,
तुम्हे रास्ते भी, अपनी मंजिल लगने लगेंगे।
पलकों पर हसीं, ख़्वाब सजा कर तो देखो,
सारे ख़ुवाब हकीकत, से लगने लगेंगे।
कभी रोते बच्चे को, जरा हंसा कर तो देखो,
मायने जीवन के, सब सच्चे लगने लगेंगे।
कभी खुद के लिए,
थोड़ा मुस्कुरा कर तो देखो,
दुःख-दर्द सारे, तुमसे कोसों दूर लगने लगेंगे।!
कभी हर दिन, नए साल सा मना कर तो देखो,
लम्हें जिन्दगी के,
और खूबसूरत लगने लगेंगे।

शून्य

डॉ. त्रिभुवन नाथ शुक्ल

जिसके लिए,
पल-पल किया
जीवन संघर्ष
नित उत्कर्ष अपकर्ष
आँख मिचौनी
करती यह जिंदगी
ग्रीष्म सरिता की तरह
हो रही क्षीण
सोचता हूँ कभी कभी, न थ व सत्य
जिसके लिए किया जीवन नष्ट
रहा त्रस्त, कटा पेट
इच्छाएँ और मनोकामनायें भी
पर मिला क्या?
वही शून्य,
जहाँ से चला था

सोने में सुगंध नहीं होती

चिरंजीव कुमार देशबन्धु, डेनमार्क

सोने में सुगंध नहीं होती,
गन्ने में फूल नहीं होता,
चन्दन में फल नहीं होता।
राजा की दीर्घ आयु नहीं होती
विद्वान कभी अमीर नहीं होता।
कोई कभी असीमित नहीं होता,
सभी की सीमाएं बंधी होती हैं।
अगर शाहजहां शहंशाह नहीं होता,
ऐ ताज तेरे बनने का, कोई वास्ता नहीं होता।
धोखा जो दोस्तों से करते,
वे दोस्त नहीं बक्शे जा सकते।
बुझदिल तो बक्शे जा सकते हैं,
गद्दार नहीं बक्शे जा सकते हैं।

जाड़े पर

रमई काका

जाड़े ते कबौं डेरान नहीं,
अब डेरभुत उई बीरौ होइगे
जाड़े के बड़े-बड़े हीरो,
अब खटिया पर जीरो होइगे..
अब सुनो तड़क्के का नहाबु
उई भूलि गईं भगतिन चाची
लोटिया भरि पानी डारैं तौ
घर माँ घूमैं नाची-नाची,
पानी ते हारी मानि गये
अबकी तौ पंडित सिउ किसोर
पानी तो थ्वारै चुपरति हैं,
मुलु मन्त्र पढ़ति हैं जोर-जोर
बप्पा हम आजु नहैबै ना
लरिकौना मांगत माफी है।
दुइ कलसा पानी का करिबे
अब तौ चुल्लु भरि काफी है
बहुरिया सासु का भय कई कै
बसि सी-सी-सी सिसियाय दिहिसि
कहुँ आड़ म धोती बदलि लिहिसि
पानी धरती पर नाय दिहिसि..

नितांत एकाकी

नूतन पाण्डेय

एक छोटा बालक
निर्धन, असहाय, कृशकाय
फटे चिथड़े कपड़ो में
दुखित, शोषण और अन्याय से जैसे
समझौता कर चुका हो
सूनी - सूनी आंखों में
संसार भर की दीनता समेटे
चौराहे की रेड लाइट पर खड़ा
कुछ पाने की चाह में
अपने आश्रय को खोजता
उदास आखों से
एकटक मेरी ओर, देख रहा था
पर वह शायद नहीं जानता था
कि मै भी हूँ उसी की तरह
कुछ कर सकने में असमर्थ
कुछ पाने में लाचार
कुछ कह पाने में बेबस
मूक, आश्रयहीन और एकाकी

बुद्ध

डॉ. विवेक गौतम

सूरज के साथ रहोगे
तो जलते रहोगे, तपते रहोगे।
सूरज के साथ रहोगे
तो चमकते रहोगे,
रोशनी के साथ, जगमगाते रहोगे
और कहलाओगे बुद्ध।
आसान नहीं है बुद्ध होना
इसके लिए, जलना पड़ता है,
लगातार।

प्रवासी का अहसास

सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक'

कश्मीर और उत्तर पूर्वी राज्यों के वासियों!
प्रिय,
इंसान के रूप में
कभी भरपूर जुड़ जाता हूँ
अपनी जड़ों कंदराओं से।
मैं पूरी तरह से बिखर गया हूँ,
भले ही मैं आपको कभी नहीं जानता,
मैं आपको महसूस करता हूँ
इंसान के रूप में,
आप एक करीबी दोस्त!
यह सोचना लगभग असंभव है,
और यह जानना
कि आप कितने बुरे हाल में होंगे?
एक इंसान, एक महान कलाकार
जो इंटरनेट के बिना हैं,
वे आप कितने बुरे हाल में रहे होंगे?
अकेले ही सारे अंधेरे के साथ
जहाँ आपको
एक भी रास्ता नहीं दिखता
वहाँ भी रोशनी है?
दिल्ली अभी थोड़ी दूर है।
आपने खुद को लोगों के लिए
सड़क को जलाया।
अब जिस भयानक दुःख से
गुजरना पड़ रहा है।
प्रवासी सौभाग्य से,
मैं इससे बाहर हो गया
सारा अंधेरा आपसे दूर हो गया।
क्योंकि रोशनी की तलाश में
मैं अँधेरे में इन्हीं चर्चों,
मंदिरों और मस्जिदों में
मोमबत्ती जला रहा हूँ?
सूरज को बंद दीवारों के बीच
दिया दिखा रहा हूँ।

कविता को जीना पड़ता है

डा. राम गोपाल भारतीय

शिव होने के लिए सभी को
पहले विष पीना पड़ता है।
कवि होना आसान नहीं है,
कविता को जीना पड़ता है।
क्रौंच की आह न पीड़ा बनती,
करूणा का संसार न होता
बाल्मीकि जो छंद न रचते,
शब्दों का शृंगार न होता
तुलसी, सूर, कबीर, जायसी,
केशव, कालीदास न होते
महादेवी, प्रसाद, निराला,
दिनकर सा परिवार न होता
हँसने की खातिर होठों को
खारा जल पीना पड़ता है।
कवि होना आसान नहीं है,......
कविता सिर्फ मनोरंजन का
एक सुलभ सामान नहीं है
दीपक राग से दीप जलाना
भी इतना आसान नहीं है
प्रेम और करूणा के भावों ने
कविता को जन्म दिया है
शब्दों को जो मर्म न समझे,
वो पशु है इनसान नहीं है।
भाव-देह के भग्न-हृदय को
शब्दों से सीना पड़ता है
कवि होना आसान नहीं है,......
क्रान्ति-गीत जो नहीं लिखे जाते/ तो हम
आज़ाद न होते/ प्रेम-गीत के बिना जहाँ में
शीरी औ, फ़रहाद न होते/चांद, फूल, आँसू,
बादल औ,/खुशबू का अहसास न होता
हास्य-व्यंग्य, शृंगार, ओज,
करूणा-रस छायावाद न होते
अपना दर्द छुपाकर हँसना और,
आंसू पीना पड़ता है।
कवि होना आसान नहीं है,......

कसम खायी है मुस्कराने की

नीरजा शुक्ला नीरू, कनाडा

जिंदगी की जिद है हमें हराने की
हमने भी ठानी है जीत जाने की
बड़ी उम्मीदसे तुझसे दोस्ती की थी
पर तू न बन सकी मेरे ठिकाने की
जरा इस वक्त ने क्या तेवर बदले
हकीकत सामने आ गयी जमाने की
थे जिनके साथ हरवक्त हरकदम पे हम
उन्हीं ने साजिश की हमें फंसाने की
दिल जला के रोशन किया जिनको
उन्हीं ने कोशिश की हमें बुझाने की
दस्तूर-ए-दुनियाँ है यही शायद
नीरु ने कसम खाई है मुस्कुराने की।

ग़ज़ल

राय भट्टी, ओस्लो, नार्वे

बन गये हालात ऐसे, तन कहीं है मन कहीं।
वो यहाँ पर रह रहे हैं, दिल कहे चलिये वहीं।
हुस्न को तो बंदिशों में,
कैद कर सकते हो पर,
बंदिशों में कैद करना, इश्क को मुमकिन नहीं।
उसको ही बस देखने से,
दिल को मिलता है सुकून,
इस शहर में यूँ तो चेहरे हैं,
बड़े दिलकश हसीं।
कह रहा था और कुछ,
वो कर गया है और कुछ,
प्यार था सच्चा मेरा, तो कर लिया मैनें यकीं।
उम्र का सूरज जवाँ है, हसरतों पर है शवाब।
प्यार की बारिश की रुत में,
खुश्क है दिल की जमीं।

नए बरस की सोन घड़ी

शशि पाधा, यू. एस. ए.

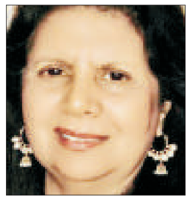

आन खड़ी द्वारे पर मेरे
नए बरस की सोन घड़ी
बीते कल को गले लगाया
सुबह सवेरे विदा किया
प्रेम नेह से भरी पोटली
डलिया में आभार दिया
जाने कितनी दूर डगर है
अखियाँ-वाणी भरी-भरी।
नियम जगत का रीत यही
पुरखों ने यही बात कही
समय बटोही रुका न रोके
पलछिन धारा नित्य बही
आगत के स्वागत में नभ से
स्वर्ण किरण की लगी झड़ी
पाहुन को बाहों में भर कर
आदर और सत्कार किया
रोली-चन्दन भाल सजाकर
गुड मिश्री का थाल दिया
विश्वासों की मौली बाँधी
आशाओं की पुष्पलड़ी
देहरी लाँघ के आई घर में
नए बरस की पुण्य घड़ी।

हाइकु

एस. डी. तिवारी

जागता रहा
अलाव सारी रात
हमारे संग

मेघ में छुपा
बरसात की रात
दिखा न चाँद

ठण्ड की रात
ढूंढते रहे चाँद
धुंध में खोया

गिरा जो पारा,
घास पर छिटके
मोती के दाने

नहाती रही
ठण्ड में पूरी रात
ओस में घास

लेकर हाथ
ठंडक से दो हाथ
चाय का कप

अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी संगोष्ठी १६ जनवरी को नारनौल (हरि०) में

नारनौल। मनुमुक्त 'मानक मेमेरियल ट्रस्ट द्वारा स्थानीय ट्राडा सेक्टर-१ स्थित अन्तरराष्ट्रीय सांस्कृतिक केन्द्र 'मनुमुक्त' भवन में १६ जनवरी को देशा में हिन्दी, विदेश में हिन्दी विषय पर केन्द्रित एक अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें भारत, नार्वे, फीजी और बंग्लादेश के आधा दर्जन से अधिक विद्वान सहभागिता करेंगे। गुरूग्राम (हरि०) निवासी पूर्व राजदूत आजाद सिंह तूर की अध्यक्षता में होने वाली इस संगोष्ठी में संस्कृति विश्वविद्यालय, मथुरा (उ०प्र०) के कुलपति डॉ. राणा सिंह मुख्य अतिथि तथा सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (राज.) के कुलपति, डॉ. उमाशंकर यादव विशिष्ट अतिथि होंगे। इस महत्वपूर्ण संगोष्ठी में ओस्लो (नार्वे) के विश्व प्रसिद्ध साहित्यकार और स्पाइल-दर्पण पत्रिका के सम्पादक डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल, ढाका (बांग्लादेश) की हिन्दी सेविका और बतौर बंग्ला की उद्घोषिका नरगिस सुल्ताना तथा नौसोरी (फीजी) की हिन्दी सेविका सुयेता दत्त चौधरी के अतिरिक्त भारत से आगरा (उ०प्र०) के डॉ. दिग्विजय शर्मा तथा दिल्ली के अनिल विकास जैसे हिन्दी-विद्वान बतौर विशिष्ट अतिथि वक्ता हिन्दी की वैश्विक स्थिति पर विचार-मंथन करेंगे। उक्त जानकारी देते हुए चीफ ट्रस्टी डॉ. रामनिवास मानव ने बताया कि इस अवसर पर सभी संभागी विद्वानों को ट्रस्ट द्वारा अंगवस्त्र, स्मृति-चिन्ह और सम्मान पत्र भेंटकर सम्मानित कभी किया जायेगा।

एक मुद्दत हुई है उस चमन से गुजरे हुए

अभिनव शुक्ल, यू.एस.ए.

रात अरसे से हर एक शाम के बाद आती है,
जिस जगह हमने गुजारा था वो बचपन अपना,
आज भी हमको उसी शहर की याद आती है।
वो हजरतगंज कि जिसकी हसीन सड़कों पर,
फिरते थे मारे मारे कभी हम दिन भर,
अमीनाबाद वो कि जिसका जिक्र छिड़ते ही,
झूम उठता था हमारे घरों का हर पत्थर।

वो गोमती नगर वो अलीगंज नगर इन्दिरा का,
वो सड़के आर डी एस ओ की जहाँ था मैं खेला,
वो बासमण्डी, वो राजाजीपुरम, वो खदरा,
और नक्कखास में इतवार का बड़ा मेला।
वो चारबाग वहां जिसका नाम सुनते ही,
किसी के आने की आहट सुनाई देती थी,
वहीं पर पास ही तो थी बड़ी ऊँची बिल्डिंग,
जहाँ से शहर की रौनक दिखाई देती थी।

वो डालीगंज के आगे बनी पुरानी सड़क,
जहां की रातें सितारों में डूब जाती थीं,
वो भूतनाथ का बाजार जहाँ सुनते हैं,
नई शामें थी नई आग खूब आती थी।
वो श्यामलाल लेन जिस पर एक पुराना घर,
अचार वाली गली की महक का वो मंजर,
वो र्बमा स्टाप कि जिससे जरा सा आगे था,
किसी नादान महल की मजार का पत्थर।
ईमामबाड़े से लगती अजीम वो मस्जिद,
जहां अल्लाह से हम सीधे बात करते थे,
वो घड़ी वाली मीनार, रूमी दरवाजा,
बैठकर जिस पे वहां दिन को रात करते थे।

वो रेजीडेसी कि जिसकी बड़ी दीवारों पर,
निशान आज भी कायम है उस जवानी के,
गदर का नाम लेकर जो उठी थी मेरठ से,
ये हैं पन्ने उसी भूली हुई कहानी के।
वो के डी सिंह जी के नाम का बड़ा मैदान,
जहां पर बड़े लोग खेलने को जाते थे,
उसी के पीछे ही तो बना था हनुमान सेतु,
जहाँ से धरती और आकाश नजर आते थे।
वो घाट गोमती का जिसकी गोद में आकर,
किसी के डूबते दिन को सलाम करते थे,

वो नदी जो सदा खामोश बहती रहती थी,
सब अपना अपना वहां इंतजाम करते थे।
चिकन का कुर्ता हो या हो कबाब टुण्डे का,
प्रकाश की कुल्फी बाजपेयी की पूरी,
हम अपनी सायकिल पर पूरी नाप लेते थे,
शहर के इस तरफ से उस तरफ की दूरी।

हया जो लड़कियों में आज तलक कायम है,
नशा जो आज भी सड़कों पे बहता रहता है,
वो खुशबुएँ अलग अलग तरह की उड़ती है,
वो लहजा आम को जो खास कहता रहता है।
शहर के एक तरफ देखो तो यह लगता है,
सियासतों ने अपना हाथ बढ़ा रखा है,
नजर को दूजी ओर करते हैं तो पाते हैं,
प्यार ने प्यार को परवान चढ़ा रखा है।

वो नजाकत वो नफासत वो तकल्लुफ यारो,
जो किताबों में कही तुमने भी पढ़ा होगा,
वहां की गलियों में मेहफूज आज भी है सब,
वक्त भी 'पहले आप' कहके ही बढ़ा होगा।

कोई कविता कोई गजल या कोई गीत कभी,
बयान उस शहर का हर रंग नहीं कर सकता,
वहां की बात ही कुछ और है चलो छोड़ो,
दिलों से दिल के लिए जंग नहीं कर सकता।

वो लखनऊ है जहाँ अब भी चाँद और सूरज,
हर एक राह को झुक कर सलाम करते हैं,
वहां के ढंग और जबान सब निराले हैं,
हम अपना किस्सा यही पर तमाम करते हैं।

मगर इतनी सी बात हमको और बतानी है,
कभी सुबह तो कभी शाम के बाद आती है,
जिस जगह हमने गुजारा था वो बचपन अपना,
आज भी हमको उसी शहर की याद आती है।

प्रो. निर्मला एस मौर्य की दो कवितायें

हवा-पानी और धूप

हवा पानी और धूप मिले एक दिन
हवा सरसराई धीरे से फुसफुसाई
पानी को हिलाया लहरें उठाई
आगे बढ़ी और जोर से खिलखिलाई
वो थी खिली-खिली, जोश से भरी-भरी,
लगाए ठहाके, फिर गुनगुनायी
खोजा झरोखा, छोटा सा आंगन
दोनों थे गायब, हुई अनमनी-सी
किरणें समेटी, बढ़ी और आगे
दीवारें खड़ी थीं, इमारतें थीं ऊंची
नहीं खोलते थे अब लोग खिड़की
नहीं खोलते थे अब लोग खिड़की
हवा, पानी और धूप मिले एक दिन
हवा सरसराई धीरे से फुसफुसाई
पानी को हिलाया लहरें उठाई।।

बिटिया

बिटिया तुम्हारा ठुमक-ठुमक कर चलना
कभी हिलकोरे भर रोना, तो, कभी हंसना
तुम्हारी उटंगी फ्रॉक डगमगाते कदम
मुझे अंदर तक आनंदित कर जाते हैं
ए!! मेरी नन्हीं परी ऐ!! एंजेल
मुस्कुराकर दरवाजे के पीछे छुप जाना
कभी ठुमकना कभी रूठ जाना
मेरी आत्मा को छू जाते हैं
हर बिटिया की किलकारी हो हर घर में
बिटिया की किलकारी हो
नन्हे पांव में पायल की छम छम
और, नन्हीं चूड़ियों की खनखन हो
ए!! बिटिया चली आओ चली आओ
एक दिन कबूतरी बन पंख पसार उड़ जाओगी
अपना नया आशियां बनाओगी
तुम्हारा ठुमक-ठुमक कर चलना
कभी हिलकोरे भर रोना तो कभी हंसना।

प्रेम है तुम से

लालित्य ललित

न चाँद तोड़ कर लाऊंगा
न पहाड़, सिंपल आदमी हूँ
पेशे से डॉक्टर,
स्लिपडिस्क खिसकने का खतरा है
सलीके से, प्रिकॉशन रखता हूँ
बिल्कुल नहीं कहूंगा कि
तुम मेरे साथ बगीचे में कोई गीत गाओ
मेरे आगे-पीछे घूमो,
इसलिए ओपीडी में मिलने का मजा है
सीएमओ से कह कर
अपने साथ ही तुम्हारी भी
ड्यूटी लगवा लेता हूँ,
ये ही तरीका ठीक रहेगा
प्रेम का भी तरीका
डॉक्टर्स के लिए कोई अनूठा नहीं
अब उसका कहना है, शेफाली माथुर का
प्रियवंद तुम मुझे पहले भी पसंद थे
पर अब तुम्हें डूब कर प्रेम करती हूँ
लगता है तुम मेरी सांसों में बसते हो
मेरे संग साथ चलते हो
जीने का तरीका भी सिखाया है तुमने
प्रियवंद ने कहा शैफाली
मेरा प्रेम कोई पुराने फिल्मी हीरो जैसा ही है
जो एक पेड़ के इर्द गिर्द
गाना शूट कर लिया करते है, लव यू,
शैफाली प्रियवन्द के कंधे पर झूल गई
गालों का स्पन्दित करता स्पर्श
प्रेम में इजाफा कर रहा था
मानो दोनों ने बेशक चांद न तोड़ा हो
पर जीने की कसमें खाई है
जिनका समर्पण आज भी बोलता है
जिसमें न कोई बनावट है
न ही कोई मिलावट है।
दोनों के हाथ एक दूसरे के हाथों में है।

नया वर्ष आया है...

डॉ दिग्विजय कुमार शर्मा 'द्रोण'
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (भारत)

तुम कहते हो नया वर्ष है आया
यहाँ सब कुछ वही है जो कल बीत गया
तिथियों के बदल जाने से
यहां नही कुछ बदला है
वही है शरद की राते, वही है मुसाफिर
वही राज नेता, वही कलमगार हैं
वही तो लोग है यहां, वही सोच भी उनकी
यहां नया कुछ भी नही, न ही बदला है
बस बदला है तो बस अंको का बदलना।
अगर बदलना ही है तुमको
तो अपनी सोच को तुम बदलो
अपने कर्तव्य को समझो,
निस दिन सत्य का पालन करो
और नएपन का भावभर
नई ऊर्जा के साथ एक नया परिवर्तन
अपने देश और देशवासियों के
तन मन भर डालो।
जो नया करने को रहता है मन उत्साहित
बीत गया जो दिन है उससे
सीखो और अपने मे सुधार करो
बहुत भविष्य की चिन्ता छोड़ो
नित नए विचारों का संकल्प लो
और स्वच्छ भावनाओं के साथ
कुछ नया करो।
करो कुछ नया देश हित के वर्तमान में
अपने पूर्वजों से सीख नई पीढ़ी
का आगाज करो
रातें पूस की शरद की गहरी
दिन में कुहासा और धुन्धु रहे
गरीब पड़ा है गठरी सा बन
अमीर हुआ मदमस्त बड़ा।
अकड़न जकड़न और ठिठुरन है
कहाँ यहाँ नव वर्ष रहा।
सूरज की आशा में बैठे
कि कब आये जाड़ों के दिन धूप यहां
सोचो तुम अब देश वाशियो
कैसे गरीब का चूल्हा जले यहां
गरीब और गरीब होता यहाँ
धनवानों पर धन की कमी नही
वक्त बड़ा बलवान यहाँ पर
कब क्या हो कुछ पता नही।
आएगा नव वर्ष शीघ्र अब
जब धरा करेगी श्रंगार यहाँ
रंग बसन्ती की चादर ओढ़ धरा तब
गरीब किसान भी खेतों में नाचेगा
कवि विजय भी तान में अपनी
नए नए गीत गायेगा
चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा को
हर्षित नव वर्ष है आएगा।

चिड़ियों को नींद नहीं आती

राम औतार बैरवा

चिड़ियों को नींद नहीं आती
गिद्ध रात भर जागते हैं
मुर्गे सिर्फ गांवों में बोलते हैं
मोर चिड़ियाघरों में
गुलाब अमीरों के आंगन में शोभित हैं
हरी घास कंक्रीट के नीचे दब चुकी है
लू ने सारी बाजी जीत ली है
चंद शीत, चंद बारीश,
काली हवाएं, काला पानी,
काला आसमां और काली चांदनी
भोर की रुआँसी किरणों से पूछ रही हैं
तुमने कहीं बंसत को देखा है?

राज कपूर की वो रूसी हीरोइन अब कहाँ हैं?

प्रभात पांडेय, बीबीसी संवाददाता

मैं तूमसे बहूत प्यार करती हूँ

जब मैंने रूसी अभिनेत्री और मशहूर बैले डांसर सेनिया रेबेंकीना से पूछा कि क्या आप हिंदी में कुछ बोल सकती हैं तो उन्होंने जवाब में ये लाइन कही।

सेनिया, राज कपूर की १६७० में आई मशहूर फिल्म 'मेरा नाम जोकर' में काम कर चुकी हैं। फिल्म में उन्होंने सर्कस में काम करने वाली एक डांसर का किरदार अदा किया है जिसे राजू (राज कपूर) से इश्क हो जाता है।

१४ दिसंबर को राज कपूर का ६५वां जन्मदिन है। ऐसे में मैंने कुछ दिनों पहले सोचा कि अगर सेनिया से राज कपूर के बारे में और उनके साथ काम करने के अनुभव के बारे में बात की जाए तो ये काफी दिलचस्प रहेगा।

मगर उनके बारे में पता लगाना ख़सा मुश्किल साबित होने वाला था।

वो अब कहाँ हैं क्या करती हैं और मुझसे बात करना चाहेंगी भी या नहीं, क्योंकि 'मेरा नाम जोकर' में चर्चित भूमिका के बावजूद सेनिया हिंदी फिल्मों से गायब ही हो गईं।

ऐसे हुआ संपर्क

मैंने कपूर परिवार से भी संपर्क साधने की कोशिश की और उनके बेटे और मशहूर अभिनेता ऋषि कपूर से जानना चाहा कि क्या वो सेनिया के संपर्क में हैं लेकिन ऋषि कपूर ने जवाब दिया कि फिलहाल उनके पास सेनिया से जुड़ी कोई जानकारी नहीं है।

तब मैंने बीबीसी रूसी सेवा से संपर्क साधा और उन्होंने आख़िर सेनिया का नंबर खोज निकाला। मैंने थोड़ा झिझकते हुए उनको फोन पर मैसेज किया कि क्या वो हमसे राज कपूर के बारे में बात करना चाहेंगी।

मैसेज भेजने के सिर्फ आधा घंटे के अंदर ही उनका जवाब आ गया, मुझे राज कपूर के बारे में बात करने पर बेहद खुशी होगा। लेकिन फिलहाल मैं इटली में हूँ और छुट्टियां मना रही हूँ। आप मुझे ३-४ दिन बाद फोन कर सकते हैं तब तक मैं मास्को लौट जाऊंगी और इत्मीनान से आपसे बात करूंगी।'

मैंने हफ्ते भर बाद उनको फोन मिलाया तो उन्होंने मुझसे काफी टूटी-फूटी अंग्रेजी में बात करते हुए कहा, 'देखिए मेरी अंग्रेजी बहुत ख़राब है। मैं आपसे कैसे बात कर पाऊँगी? मैं तो रूसी भाषा बोलती हूँ।'

मैंने जवाब दिया कि आप कम से कम ख़राब अंग्रेजी बोल तो लेती हैं लेकिन मैं तो रूसी भाषा का एक शब्द भी नहीं बोल सकता तो मजबूरन मुझे आपसे अंग्रेजी में ही बात करनी पड़ेगी।

मैंने आपको टूटी-फूटी अंग्रेजी बोलने की छूट दे दी जिसे उन्होंने खुशी-खुशी कबूल कर लिया और हमारी बातें चालू हो गईं।

सेनिया फिलहाल अपने वतन रूस में ही रहती हैं और ७४ साल की उम्र में भी बैले डांसिग के अपने शौक को उन्होंने जिंदा रखा है।

राज कपूर से मुलाकात

सेनिया ने बताया कि वो तब २४-२५ साल की थीं जब राज कपूर से उनकी पहली मुलाकात हुई। राज कपूर 'मेरा नाम जोकर' की तैयारियाँ कर रहे थे और मॉस्को आए हुए थे। एक शाम उन्होंने सेनिया का बैले डांस देखा और उनसे ख़ासे प्रभावित हुए।

उन्होंने सेनिया को अपनी फिल्म में काम करने का प्रस्ताव दिया। सेनिया राज कपूर के नाम से वाक़िफ थी क्योंकि उनकी फिल्में 'आवारा' और 'श्री ४२०' रूस में बहुत मशहूर रही थीं और उनके गाने रूसी लोग गुनगुनाते रहते थे।

सेनिया ने ये ऑफर स्वीकार कर लिया और वो शूटिंग के लिए भारत आ गईं।

'सबका ध्यान रखते थे राज कपूर'

हालांकि फिल्म में उनका ज्यादा बड़ा रोल नहीं था लेकिन वो इस अनुभव को यादगार मानती हैं। वो कहती हैं, 'सेट पर राज कपूर सबका बड़ा ध्यान रखते थे। उनके सेट पर चाहे बड़ा कलाकार हो या कोई जूनियर। सबको एक सा ट्रीटमेंट मिलता था। लेकिन एक बार कैमरा चालू हो जाने पर वो बड़े कठोर हो जाते और जब तक कोई बेस्ट शॉट ना दे दे, संतुष्ट नहीं होते थे।'

सेनिया बताती हैं कि रूस में अब के युवा जरूर हॉलीवुड फिल्में ही ज्यादा देखते हैं लेकिन ६० और ७० के दशक में राज कपूर रूस में एक बहुत बड़ा नाम थे और उनकी फिल्में वहाँ बहुत हिट होती थीं।

तापसी पन्नू और भूमि पेडनेकर ने 'शूटर दादी' से कैसे सीखी चाल ढाल?

ज्योतिका सिंह, बीबीसी संवाददाता

कहते हैं सपने देखने की कोई उम्र नहीं होती, इस कहावत को सच कर दिखाया उत्तर प्रदेश में बागपत के जोहरी गांव में रहने वाली तोमर परिवार की बहू चन्द्रो और प्रकाशी तोमर ने।

इन्होंने हमेशा ही अपने घर का काम किया, अपने पतियों की सेवा की, खेत जोता और ज्यादा कुछ ख़ास कर नहीं पाईं। लेकिन अपनी पोती का डर दूर करने गयी चंद्रो दादी ने जब पिस्तौल उठायी तब उनकी जिंदगी बदल गयी।।

अब उनकी जिंदगी पर फिल्म भी बन गई है।

२५ अक्तूबर को रिलीज होने वाली फिल्म 'सांड की आँख' में चंद्रो तोमर का किरदार निभा रही हैं भूमि पेडनेकर और प्रकाशी तोमर का किरदार निभा रही हैं तापसी पन्नू।

बीबीसी से ख़ास बातचीत की बागपत की 'शूटर दादी' चंद्रो और प्रकाशी तोमर ने।

चंद्रो तोमर की पोती शूटिंग रेंज के माहौल से घबरा गयी और रोने लगी थीं तब अपनी पोती को रोते देख उसका डर दूर करने के लिए चंद्रो तोमर ने पिस्तौल उठाई और कहा "देख बेटी डरने की जरूरत नहीं है, मैं चलाके दिखाती हूँ और तब मेरा पहला ही निशाना टारगेट पर लगा, सबने कहा दादी तूने तो कमाल कर दिया।" शायद इसी वाक्य ने उनकी जिंदगी बदल दी।

प्रकाशी तोमर से जब पूछा गया कि कैसे उन्होंने अपने घर गृहस्थी को साइड रख कर पिस्तौल हाथ में उठा लिया, तब उनका जवाब था, "हमने तो अपने बच्चों का एडमिशन कराना था, हम तो बस उनके साथ जाया करते थे। १ -२ दिन हो गए थे बैठ कर देखते थे, कैसे पिस्तौल भरते हैं, कैसे शूट करते हैं। फिर अचानक मुझे भी शौक़ चढ़ा सोचा एक बार मै। भी चला के देखूँ। मेरा पहला छर्रा ही टारगेट पर लग गया तो सबने कहा दादी तू रोज प्रैक्टिस किया कर, तू बड़ी अच्छी है इसमें।"

तापसी पन्नू और भूमि पेडनेकर की फिल्म बहुत पसंद की गयी फिल्म में तापसी पन्नू और भूमि पेडनेकर ने अपनी उम्र से बड़ी महिलाओं का किरदार निभाया है। फिल्म का निर्देशन तुषार हिरानंदानी ने किया है।

प्रकाशी तोमर से जब पूछा गया कि उनकी इतनी अच्छी सेहत का राज क्या है?

इस पर वो कहती हैं, "हम घर का खाना खाते हैं जैसे दाल चावल। बस खाने के बाद मीठा चाहिए होता है, जब घर होते हैं तो गुड़ शक्कर और जब बाहर होटल में होते हैं तो गुलाब जामुन और दूध। दूध के बिना हमसे रहा नहीं जाता।"

सांड की आँख फिल्म के ट्रेलर में दिखाया गया है कि दोनों शूटर दादिओं ने अपना पहनावा नहीं छोड़ा।

इस पर चंद्रो तोमर कहती हैं, "हमें अपनी बोली पर, अपनी पहनावे पर गर्व है, हमने अपना पहनावा कभी नहीं छोड़ा, हमने किसी की परवाह नहीं की। बस काम करने की लगन होनी चाहिए, हिम्मत करे इंसान तो सहायता करे भगवान।"

शूटर दादियों ने तापसी और भूमि को अपनी चाल ढाल कैसे सिखाई, इस सवाल के जवाब में चंद्रो तोमर कहती हैं, "हाँ मैं और प्रकाशी को वो बात करते दिखाया करती थीं, हमने उनको हमारी बोली बोलना सिखाया, तापसी पन्नू और भूमि पेडनेकर ने हमारे किरदारों को ख़ूब अच्छे से निभाया है।"तापसी और भूमि के साथ उनका वक्त कैसा गुजरा, ये पूछे जाने पर प्रकाशी तोमर का कहना था, "दोनों बच्चों का व्यवहार बहुत अच्छा रहा। दो-ढाई महीने वो हमारे साथ ही रहीं थीं। तापसी और भूमि दोनों हमारे ही घर रहा करती थीं। खूब वक्त गुजरा हम सबका।"

ये देवरानी और जेठानी की जोड़ी आपको सगी बहनों से कम नहीं लगेगी, चंद्रो तोमर और प्रकाशी तोमर दोनों ने इस बात का दावा किया है कि उन दोनों के बीच कभी नोक झोक नहीं हुई, वो हमेशा प्यार से रहीं और उनके घर में सभी बहुएं और बच्चे सब प्यार से रहते हैं।

– Vi er sterkt preget av Ari Behns død

Kong Harald forteller at kongefamilien er sterkt preget av Ari Behns dødsfall, men at det varmer å oppleve folks medfølelse.

– Det har varmet å oppleve folks medfølelse og tente lys på Slottsplassen. Det er trøst i alle de gode minnene og vakre ordene som har blitt formidlet om pappaen til tre av våre kjære barnebarn, sa kongen i sin nyttårstale, som ble sendt på NRK nyttårsaften.

Han minnet om at nyttårsaften er en kveld fylt av håp og forventning, men at mange av oss går inn i det nye året med sorg i hjertet.
– Mine tanker er i kveld særlig hos alle dem som går ut av det gamle året med et sorgfullt tomrom etter noen de var glade i, sa kongen.
– Så mørkt at ingenting hjelper

Ari Behn tok sitt eget liv 1. juledag.

– Av og til er ikke livet til å holde ut.
For enkelte blir det så mørkt at ingenting hjelper. Ikke engang kjærligheten til sine aller nærmeste. Noen ser ingen annen utvei enn å forlate livet. De som står igjen må leve videre. Fattigere – uten den de var glad i, sa kongen i talen.Han pekte på at uvissheten om hva som skal møte oss, gjør oss alle sårbare.
– Det beste vi kan gjøre, er å være der for hverandre, se hverandre, huske å gi hverandre de gode ordene. Og bære hverandre om det trengs.

Kongen legger bak seg et aktivt år, med flere reiser rundt omkring i landet. Og han forteller at han blir rørt av det han ser.

– Vi opplever et folk som bryr seg om sine medmennesker. Som bidrar i frivilligheten. Som kjemper for sine små lokalsamfunn – og for at andre skal ha det bra. Disse møtene gjemmer vi på som våre kjæreste fortellinger om hvem vi er og hva vi er laget av, sa han.

– Livet er skjørt

Videre trakk kongen linjer tilbake til andre verdenskrig, og han framhevet tillit og samarbeid som viktig for gjenoppbygningen av landet.

– De fem mørke krigsårene hadde skapt mistillit og mistenksomhet blant oss. I oktober var jeg i Kirkenes for å markere frigjøringen av Øst-Finnmark, som betydde begynnelsen på slutten av krigen. I året vi nå går inn i skal vi minnes at det er 75 år siden freden kom, sa kongen.Han påpeker at vi fremdeles trenger «hell og hardt arbeid» for å styrke landet vårt og hverandre.

– For freden er skjør. Tilliten er skjør. Og livet er skjørt. Det blir vi stadig minnet om.

Nyttårs fortsettelse av Lars West Johnsen

Klimagassutslippene stiger.

Klimagassutslippene stiger. CO2-konsentrasjonen øker. Temperaturen tiltar. Arktis smelter, Australia brenner. Gjelda eser.

Antallet dollarmilliardærer blir stadig flere. Dobbelt så mange er det blitt av dem det siste tiåret. Utgifter til militært materiell stiger. Mon tro det henger sammen. Bare én rakett fyker livsfarlig langs bakken. Renta er nær null. Penger er gratis.

Vi husker alle første nyttårsdag for 364 dager siden da Erna Solberg i heldekkende lilla – julas varme farge som i kirkens liturgi egentlig er botens, sorgens og forberedelsens farge – fortalte oss med et lekent blikk at vi måtte få flere barn. «Jeg tror ikke jeg trenger å forklare hvordan dette gjøres».

Høhø. Kanskje var statsministerens fargevalg en freudiansk glipp. Ordene var uansett mest egnet til å provosere. Og forvirre. For dette var stikk i strid med det statsministeren hadde sagt bare noen få år før. «Befolkningsendringer handler om de små talls store konsekvenser», sa hun på NHOs årskonferanse i 2015 og var tydelig på at et økende antall nordmenn var en utfordring.

«Vi må være forberedt på befolkningsvekst», sa hun. Men så dukka jo KrF opp i monitor. Virkeligheten er relativ i politikken.

Og nå måtte vi alle følge bibelens ord om å være fruktbare og bli mange. Ja, nå skulle vi fylle jorden og legge den under oss. Som om vi ikke hadde gjort det med klampen i bånn.

Også vi menn kunne bli opprørt over Ernas ord, hun nevnte oss ikke når det skulle fødes flere barn, som om menn ikke har noen rolle i dette mirakelet.

Våre mange tusener og dramatisk økende antall ufrivillig barnløse, hadde også

absolutt grunn til å føle seg tråkka på. For det er ikke bare å få barn.

Barn er ikke bare-bare. Det er uutholdelig faktum for mange.

Erna glemte også at det er samfunnsstrukturelle grunner til at den norske fødselsraten er lavere enn på flere tiår. Og at løsningen er politisk – ikke privat.

Det er lov å håpe at statsministeren er klokere i sine ordvalg før morgendagens nyttårstale.

Men kanskje får vi en oppfordring til å kjøre mer bil, til å fly mer. For å fylle opp kapasiteten hun legger opp til. For det er verdt å merke seg at Solberg nå presser på for ny E18 inn til Oslo. En vei ingen vil ha, og som vi ikke trenger. Trafikken synker. Det samme gjelder flytrafikken. Den er kraftig på vei ned i land som Tyskland og i Sverige.

Likevel er det politisk flertall for å planlegge ny rullebane på Gardermoen. Mer vei, ny rullebane er krutt til rakettene som fortsetter å stige – og undergraver klimamålene.

Et år er over, og det er tid for refleksjon og ettertanke. Jeg husker særlig ett øyeblikk. Det var da jeg trodde at det snudde.

Det var nyhetssendinga som slo fast at menneskeheten hadde reddet seg selv. Og hadde begynt den helende prosessen. Jeg kunne fortelle barn og kommende barnebarn nøyaktig hvor jeg var da nyheten kom. Et sted langs riksveien på vei til fjells. NRKs stemme på radioen kunne melde at oljeproduksjonen var på vei ned.

NRK-nyhetene meldte at oljeproduksjonen avtok! Halleluja! Yess! Tenkte jeg. Endelig. Det snur.

Nei da, enten var formuleringen klønete eller så var mottakeren treg, uansett var det feil. Oljeproduksjonen var ikke på vei ned. Det var veksten i produksjonen som hadde begynt å avta.

Altså, den steg fortsatt, men rakettens bane var mindre bratt. Samtidig som en hel verden snakket om klima i store bokstaver, om å kutte ut olje. Den ene hånda vet ikke hva den andre gjør. Den ene politikeren vet ikke hva den andre gjør.

Nå ett år etter er oppfordringen fra Erna Solberg like dum. Like nærsynt og nasjonalistisk som vi har lært oss å forvente fra den kanten.

Fra alle kanter, egentlig. For vi i Norge er blant verdens største egoister. 10.000 milliarder har vi på bok, hvert øre henta opp fra dypet i Nordsjøen, men staten Norge gjør ingenting for å bremse takten i utvinningen av ny olje. Da vi i høst fikk en debatt om at pengene kanskje kunne gå til noe annet enn hjemlig velstand, ble det bråk.

Vi gasser heller på. Vi lar statseide Equinor bruke millioner på å overbevise, eventuelt hjernevaske, ungdommen vår om at olje er bra. Om at norsk olje er bedre enn de andres skitne olje. Det var ille, og nå har Sylvi Listhaug tatt over butikken.

Vi forholder oss ikke til verden her i Norge. Vi er en egen planet. Med egne regler.

Derfor kan vi pumpe opp olje, fly mest, kjøre mest, unne oss alt, forbruke som gale og forurense mer enn de fleste. Regner man inn klimagasseksporten vår, er vi verdens mest forurensende folk. Ja, bortsett fra sjeikene i Qatar, da.

Naturvernforbundet regner med at Norges utslipp fra nye planlagte olje- og gassfelt vil øke med 150 prosent sammenlignet med dagens utslipp. Snakk om nyttårsrakett inn i framtida.

Vant VM i hurtigsjakk

Magnus Carlsen tok sin ellevte VM-tittel da han gikk til topps etter remis mot Hikaru Nakamura. For første gang siden 2015 gikk Magnus Carlsen til topps i VM i hurtigsjakk. 29-åringen sikret sin tredje tittel med remis mot Hikaru Nakamura.

VM-tittelen var et faktum etter til sammen åtte seire og sju remis i Moskva. Carlsen hadde en noe treg start på mesterskapet i den russiske hovedstaden, men leverte svært sterke resultater i de sju siste partiene.

Carlsen kunne sikret seg tittelen i nest siste parti mot Leinier Domínguez, men remis gjorde at spenningen holdt inn til siste parti. Nordmannen trengte kun remis mot Nakamura. Ved tap ville de to endt på samme poengsum. Carlsen har dermed sikret seg sin ellevte VM-tittel totalt.

- Det er en lettelse etter å ha mislykkes i hurtigsjakken så mange år på rad nå. Det er virkelig, virkelig deilig, sa Carlsen i seiersintervjuet

Strålende start

Carlsen fikk en strålende start på dagen da han vant med svarte brikker over Levon Aronian. Armeneren var én av fire spillere som var et halvt poeng bak ledende Carlsen før partiet.

Enda bedre gikk det mot Shakhriyar Mamedyarov i parti 13 av 15. Nordmannen utnyttet Mamedyarovs feil og sikret seg etter hvert et stort overtak. Det hele endte med at aserbajdsjaneren ga opp.

Resultatene gjorde at Carlsen ville sikre tittelen med seier over Leinier Domínguez i nest siste parti. 29-åringen tok derimot til takke med remis mot amerikaneren.

Nina Bansal blir en av få kvinnelige landslagstrenere i Norge. Det er bare ett problem.

30-åringen er fortsatt aktiv for Norge og en av Europas beste taekwondoutøvere.

– Vi måtte sikre oss hennes kunnskap. Nina er en veldig strukturert og målbevisst. Hun trener to ganger om dagen alle dager i uken og har gjort det i flere år. Vi ønsker å overføre det hun står for til dem som kommer etter henne, sier sportssjef Dag Jacobsen i Norges Kampsportforbund.

Selv ble Bansal overrasket da hun fikk forespørselen, men som hun sier:

– Jeg hadde tenkt på at det var noe jeg ville i fremtiden, men ikke akkurat nå.
Hun er utøver i grenen mønster, der man har en tenkt motstander, og der det gjelder å markere ulike tekniker for dommerne. Det gir poeng etter utførelse. Noe av programmet gjøres til musikk.

EM er neste, store mål

Bansal starter formelt i jobben 1. januar 2018. Hun overtar etter Thomas Jensen, som har vært landslagstrener i 12 år. I mellomperioden er det Fredrik Bjertnæs som skal være sjef. Problemer er bare at Bansal ikke er helt sikker på når hun skal gi seg som aktiv.

– Jeg holder på så lengre jeg føler at jeg hevder meg internasjonalt og synes dette er gøy. Jeg har fortsatt mange mål jeg ønsker å nå, men det viktigste av alt er at jeg utvikler meg og får ut mitt potensial,

forteller utøveren som nylig vant Belgia Open. Hun vant alle åpne stevner i fjor og hittil i år.

Var lenge et mønster-par

Oslojenta Nina Bansal var i mange år på lag med Joachim Wien fra Drammen, og de konkurrerte i parmønster.
Men så bikket hun 30 år og ble for gammel for denne aldersklassen. Nå velger Oslo-utøveren å fortsette individuelt.

– Hvem skal du ha ansvaret for som øverste sjef?

– Det må jo bli meg selv og Joachim, som også satser individuelt, flirer Bansal, før hun skynder seg å legge til:

– Vi har et rekruttlandslag som kommer bak, som Joachim får hovedansvaret for. Vi må jo jobbe for at det skal bli noen som overtar på seniornivå. Jeg er veldig innstilt på at vi skal få frem nye utøvere som kan overta.

– Men tenk om landslagstrener Nina Bansal ikke tar ut utøveren Nina Bansal?

– Det er jo resultatavhengig, fortsetter hun humørfylt.

Bansal har lang erfaring med hva som kreves for å nå helt opp, og innstilt på å bruke det for alt det er verdt.

Måtte ha henne på laget

– Nina har en god treningskultur vi ønsker å videreføre. Kampsportforbundet ønsket å sikre seg de beste trenerne. Skal vi få frem de beste utøverne i verden, må vi dem som vet hva som kreves, hva som må til for å bli best, sier sportssjef Jacobsen.
Han har fulgt henne i mange år og sett at hun også har bidratt som trener på klubbnivå.

– Det er ingen snarveier når det gjelder å vinne medalje i mønster. Det unike med den idretten er at man kan trene hvor som helst, også hjemme i stua, sier sportssjefen.

– Kvinner viktige som trenere

Mens hun er første, kvinnelige landslagstreneren i taekwondo, er Dave Cook landslagstrener for kamplandslaget. Det er de som har en motstander som de skal vinne over.

– Vi ønsker å prioritere kvinner som trenere og ledere i Norges

Kampsportforbund. Vi vet at med dem blir det en annen dynamikk i gruppen og en enda bedre prestasjonskultur, sier sportssjefen.

Nina Bansal ble Europamester

Nina Bansal gikk onsdag kveld helt til topps og tok gull i EM i taekwondo mønster. Hun forsvarte med dette Europamestertittelen fra 2017Bansal som deltok i klassen kvinner under 40 møtte først britiske Wenqi Li og kom seirende ut, deretter ventet tyske Baerbel Reiner og danske Charlotte Pedersen som tok bronse i VM i Taipei. Den norske utøveren fra Tveita Taekwondoklubb slo alle og møtte den tyske utøveren Elise Eckmann i finalen. Eckmann tok tok sølv i forrige VM. Også her presterte Nina Bansal best på matten og kunne smykke seg med nok et EM-gull.Hele det norske laget har jobbet målrettet inn mot EM som i disse dager arrangeres i Tyrkia. Målet før avreise var å kjempe om medaljer, så langt i mesterskapet har to Nordmenn kunnet entre pallen. I dag er det klart for parklasser og fra Norge stiller Tuva Kjødnes og Sune Østli.

Flere kvinnelige kunstnere å digge før det ble flaut

Av Igor Dundervoic og Foto: Sara Övinge

Prolog: Musikk i sola
Jeg legger meg ute i hagen. Jeg har verdensmusikk på et større forsterkeranlegg og peker den ut mot verden. Verden er joggende småbarnsmødre som prøver å riste av seg gravidkiloene, arbeidsløse hippier på tur med bikkja, fotballspillere på vei til trening, og pensjonister på sykkel. Jeg hører på Samaya-albumet til Harpreet Bansal.

Plate nr 1. Mediterende fele
Rolig fele, tydelig, orientalsk, perkusjon i bakgrunnen, tabla sannsynligvis, kontrabass. Stemningsfullt og vaiende. Hva tenker jeg om det? Jeg tenker at det er på tide med morgenkaffe. Rolig musikk og laber bris til kaffe og sigarett, det siste med litt skyldfølelse, naturligvis. Jeg tar en blås, en slurk av kaffen.

Musikken får til tider dramatisk og samtidsmusikalsk preg, men fortaper seg ikke der, den forblir orientalsk. Den funker ikke med sigarett.

Jeg prøver å rense skyldfølelsen ut av lungene og setter meg på plenen. Jeg vet egentlig ikke hvordan man gjør yoga, men jeg har sett dama mi gjøre det foran Youtube. Uansett, det funker. Skuldrene går til musikken. Håndleddene mine er kobraer i en Bollywood-film. Skjønner. Meditasjonsmusikk. Det funker. Jeg får lyst på grønn te uten melk og sukker. Jeg er litt flau over å ligge i fosterstilling på plenen.
Det er kult at fiolin som instrument er fretless og kan etterligne andre lydfasonger.
At samme instrument kan brukes til både orientalsk og western og likevel låte autentisk. Samtidig har man gjerne et forhold til fele, forventer en greie, men får servert fela i tandoori-marinade. Deilig å bli lurt. Jeg føler mer ren og opphøyd av Herpreetmusikken. Jeg føler meg mer verdt.

Ari Ben

September 30, 1972 - December 25, 2019

Fortsatt nest best på likestilling

For tredje år på rad er Norge nummer to i verden på likestilling. Det viser World Economic Forum sin rapport om forskjeller mellom kvinner og menn.

Norge er på andreplass av 153 land på likestilling. Kjønnsforskjellen har aldri vært mindre og viser nedgang fra 2018. Island er øverst på rankingen.

Rapporten måler gap mellom kvinner og menn på fire hovedområder: økonomisk deltagelse og muligheter, utdanning, helse og politisk makt.

Kun 15, 8 prosent gjenstår før Norge har lukket kjønnsgapet. Det er nå på 84,2 prosent, nesten 1 prosentpoeng mer enn i fjor.

Sametingspresident Aili Keskitalo og kultur- og likestillingsminister Trine Skei Grande på FNs kvinnekommisjon i New York i mars 2019. Foto: Simon Stjern/Kulturdepartementet.

I følge World Economic Forum sin rapport er det ingen forskjell i utdanning mellom kvinner og menn. Og de konkluderer med at Norge nå har lukket utdanningsgapet. Samtidig viser tallene at færre menn er i høyere utdanning. På politisk deltagelse ranker Norge som nummer 2 i verden, opp en plass fra i fjor.

– Dette er gode nyheter og vi skal fortsette arbeidet for å bli enda bedre, sier kulturog likestillingsminister Trine Skei Grande.

Regjeringen jobber med flere likestillingsprosjekter. Blant annet skal det i 2020 utarbeides en strategi for et mer likestilt utdannings- og arbeidsmarked, og det pågår et stort rekrutteringsarbeid for å få flere menn til grunnskolelærerutdanning. Samtidig har regjeringen startet et prosjekt som skal bidra til å øke andelen kvinner i toppledelsen i privat næringsliv.

Norges rangering på de ulike kategoriene:

Økonomisk deltagelse og muligheter – Norge rangert som nr. 11 og gapet mellom kvinner og menn er lukket med 79,8 prosent

Utdanning – Norge rangert som nr. 31 og har lukket gapet helt med 100 prosent. Dette betyr at det er svært tett i toppen mellom landene.

Helse – Norge rangert som nr. 95 og gapet mellom kvinner og menn er lukket med 97,2 prosent. Det betyr at også på helse er det svært tett i toppen.

Politisk makt – Norge rangert som nr. 2 og gapet mellom kvinner og menn er lukket med 59,8 prosent.

730 millioner kroner til Norges idrettsforbund og olympiske og paralympiske komité

Regjeringen har i statsråd i dag tildelt Norges idrettsforbund og olympiske og paralympiske komité (NIF) 730 millioner kroner i spillemidler for 2020. Dette er en økning på 14 millioner kroner fra 2020.

– Tilskuddet til Norges idrettsforbund skal bidra til å opprettholde og utvikle et godt aktivitetstilbud i den medlemsbaserte organiserte idretten, sier kulturminister Trine Skei Grande. Vi er opptatt av å legge til rette for at alle barn og unge, uavhengig av bakgrunn, kan finne seg til rette i idretten.

Tilskuddet omfatter grunnstøtte til NIFs sentraladministrasjon, idrettskretser og særforbund, aktivitetsmidler innrettet mot barn og ungdom, i tillegg til grunnstøtte til toppidrett.

8 av de 14 millionene som utgjør økningen skal komme toppidretten til gode.

– Vi har økt tilskuddet til toppidrett. Det gjør vi fordi vi er opptatt av å sikre bredden – også innenfor toppidretten. Tilskuddet skal bidra til en sterk og helhetlig norsk toppidrettssatsing, sier statsråd Skei Grande.

I tilskuddsbrevet for 2020 stiller departementet krav til blant annet godt styresett, bedre kjønnsbalanse, prioritering av etikk og holdningsskapende antidopingarbeid.

Regjeringen la frem handlingsplan mot rasisme og diskriminering basert på etnisitet og religion

I dag presenterte regjeringen ved kulturog likestillingsminister Trine Skei Grande sin handlingsplan mot rasisme og diskriminering på grunn av etnisitet og religion.

Handlingsplanen tar utgangspunkt i at Granavollplattformen stadfester at regjeringen vil bekjempe rasisme, religiøs diskriminering, antisemittisme, sosial kontroll og fordommer basert på etnisitet.Handlingsplanen har en bred tilnærming og inneholder både nye initiativ og bygger videre på tiltak og innsats i allerede igangsatte handlingsplaner og strategier.

– Norge er et samfunn med små forskjeller, tillit mellom folk og høy grad av trygghet. Og det er det viktig å ta vare på.

Samtidig vet vi at rasisme og diskriminering er demokratiske utfordringer som hindrer mange menneskers muligheter til å kunne delta og bruke sine ressurser i samfunnet, sier
– I arbeidet med denne handlingsplanen har det vært et bredt og godt samarbeid.

Regjeringen gir støtte til nye digitale læremidler i skolen

Skolen bruker stadig flere digitale læremidler, og regjeringen vil at det skal utvikles enda flere gode løsninger. Derfor får nå 13 prosjekter innen blant annet naturfag, norsk og musikk til sammen 23,7 millioner kroner i støtte. — Læremidlene er tilpasset de nye læreplanene og skal bidra til at elevene lærer mer gjennom å lære bedre, sier kunnskaps- og integreringsminister Jan Tore Sanner (H).

Digitale læremidler kan være både apper og nettbaserte, og kan inneholder tekst, lyd, bilde, video, animasjoner og spill.

Disse læremidlene skal brukes i tillegg til vanlige lærebøker og sikre at elevene blant annet utvikler gode leseferdigheter både på skjerm og papir.

— Digitale læremidler gir lærerne en større verktøykasse når de underviser elevene, men vi må sikre at de brukes på gode måter. Derfor støtter vi utvikling av digitale læremidler som bidrar til gode og smarte løsninger for fremtidens undervisning, sier Sanner.
Det stilles en rekke krav til utviklingen av slike læremidler. De skal blant annet være universelt utformet, og tilgjengelig på nynorsk og bokmål.

Det er også en forventning om at bransjen bidrar til å utvikle digitale læremidler for samiske elever og til de samiske læreplanene. Utdanningsdirektoratet, som forvalter støtten, stiller derfor krav om at alle de norske læremidler som får penger skal kunne oversettes til samisk.

Ett av prosjektene som får støtte er til faget musikk. Læremiddelet tar for seg en samisk tidsreise hvor elevene kan foreta et dypdykk i samisk kultur og historie.

Nye læreplaner og nye læremidler

I år har det i tillegg blitt bevilget 68 millioner kroner til innkjøp av digitale læremidler. For 2020 er det satt av hele 250 millioner kroner til læremidler som en følge av innføringen av nye læreplaner. De nye læreplanene skal tas i bruk høsten 2020. Læremidlene må utvikles i tråd med det nye læreplanverket som blant annet skal gi mer dybdelæring og økt praktisk tilnærming for elevene.

— Elevene skal bli flinkere til å se sammenhenger , reflektere kritisk og fordype seg i temaer som bidrar til varig læring og innsikt. Da er vi avhengig av at både lærere og elever har tilgang til blant annet gode digitale læremidler. Det skal støtten bidra til, sier Sanner.

Endringer i lover og forskrifter fra 1. januar 2020 fra Kunnskaps departementet. Norge åpner for dobbelt statsborgerskap fra januar.

Fra 2020 kan nordmenn bli statsborgere i et annet land uten å miste sitt norske statsborgerskap, og utenlandske statsborgere må ikke lenger si fra seg sitt opprinnelige statsborgerskap for å bli norske. Du må også undersøke hvilke regler som gjelder i det andre landetFor at du skal kunne ha dobbelt statsborgerskap, må også det andre landet du er statsborger av godta dette. Du må alltid undersøke om det landet du er statsborger av også godtar at du får dobbelt statsborgerskap, eller om du vil miste statsborgerskapet ditt automatisk hvis du blir norsk. Dette må du spørre myndighetene i dette landet om, for eksempel via en ambassade.

For 2020, let's resolve that
no child is left alone,
because every child matters!
Wishing you and your family
a very
Happy New Year!
Kailash Satyarthi
Sumedha Kailash

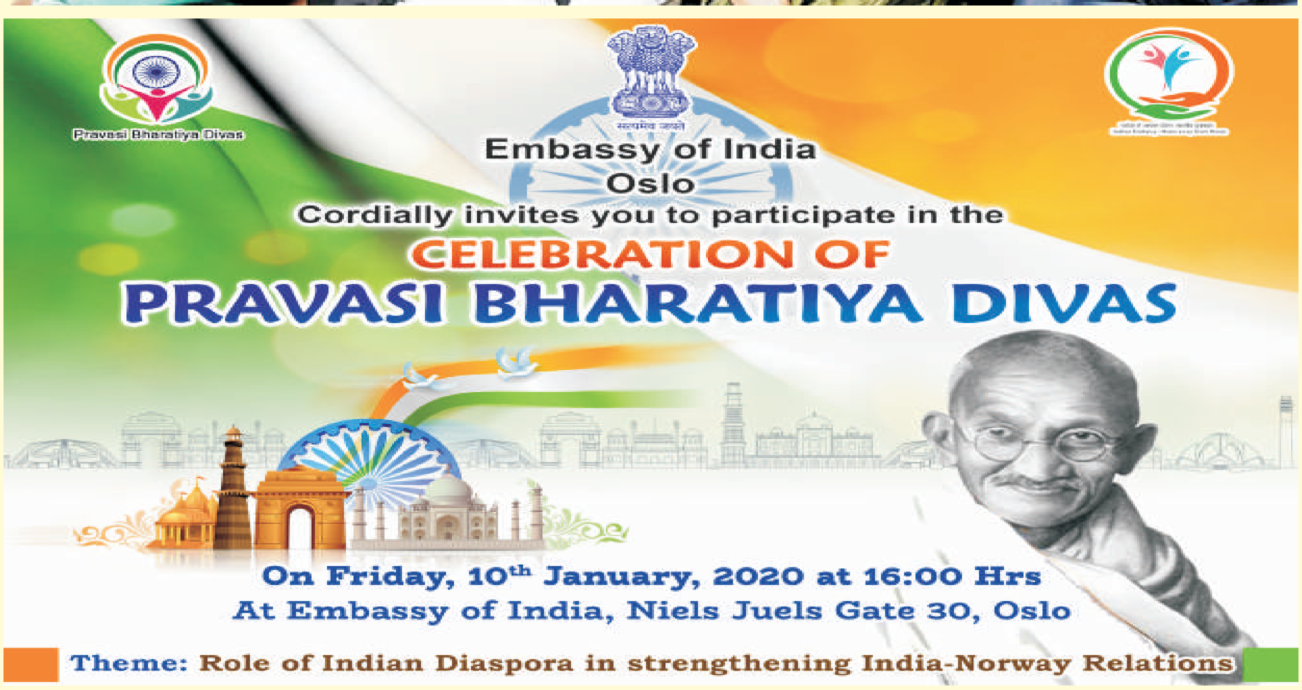
Pravasi Bharatiya Divas
Embassy of India
Oslo
Cordially invites you to participate in the
CELEBRATION OF
PRAVASI BHARATIYA DIVAS
On Friday, 10th January, 2020 at 16:00 Hrs
At Embassy of India, Niels Juels Gate 30, Oslo
Theme: Role of Indian Diaspora in strengthening India-Norway Relations

SPEIL स्पाइल (दर्पण)
Speil støttet med midler fra Norsk Kulturråd
No. 1 2020 Stiftet 1988
अंक 1 2020 स्थापित 1988
ISSN 0802 4448

Address: Postbox 31, Veitvet
0518 Oslo
NORWAY

फिल्म पुरस्कार के लिए बधाई। Gratulerer med film prisen.

अमिताभ बच्चन राष्ट्रपति राम नाथ कोबिंद से दादा साहेब फाल्के पुरस्कार लेते हुए।
Amitabh Bachchan mottok Dada Saheb Falke filmprisen av Presidenten.

विकी कौशल। Vicki Kaushal.

कीर्ति सुरेश। Keerthy Suresh.

आयुष्मान खुराना। Ayushman Khurana.